Fortnightly per copy Rs. 5/- only

ओ३म्

18th April 2016

आर्य ఆర్య జీవన్ जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

हरिद्वार अर्धकुम्भ में आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा

गंगा में स्नान से किसी श्रद्धालु के पाप नहीं कटते

हरिद्वार के अर्धकुम्भ व आर्यसमाज के स्थापना दिवस 10 अप्रैल के अवसर आज यहां आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा एवं नगर कीर्तन में भाग लेने का अवसर मिला। कुछ कारणों से हमारी बस विलम्ब से पहुंची अतः हम शोभायात्रा आरम्भ होने के कुछ समय बाद ही उसमें सम्मिलित हो सके। इस समय शोभायात्रा गंगा के तट व एक पुल पर है जहां एक कार के ऊपर बैठे हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी जी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक कुछ तथ्यों को सामने खड़ी आर्यजनता को बता रहे हैं। इनसे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी मंत्री श्री विट्ठलराव जी ने आर्यों को सम्बोधित किया। हमनें आर्य भाईयों से उनके सम्बोधन के बारे में पूछा तो सभी ने उनके सम्बोधन को तथ्यपूर्ण एवं अति प्रभावशाली बताया। सामवेदी जी के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान यशस्वी स्वामी आर्यवेश जी का सम्बोधन वहीं सड़क पर शोभायात्रा को रोककर हुआ। स्वामीजी ने कहा कि गंगा में स्नान करने से गंगा के श्रद्धालुओं के पाप कटने वाले नहीं है। बुराईयों को छोड़े बिना कोई मनुष्य पाप से मुक्त नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि यहां आये हुए भाई बहिनों में देहरादून से भी बड़ी संख्या में लोग आयें हैं जिनमें गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी और द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की छात्रायें व उनकी विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी भी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान माननीय श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी वागेश्वर से अपने साथियों के साथ आयें हैं जिनमें कुमाऊं व निकटवर्ती पर्वतीय स्थानों के अनेक भाई व बहिनें भी हैं। आज की शोभायात्रा में 15 प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के

अनेक सभासद व सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति भी इस भव्य शोभायात्रा के साक्षी बने हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि हमारे सामने के चण्डी मन्दिर में स्वामी दयानन्द जी ने तप किया था। इसी स्थान पर स्वामी दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर दुनियां के पाखण्डों व अन्य मत–मतान्तरों को चुनौती दी थी। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी व उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर ही हम यहां अर्धकुम्भ के अवसर पर वेद प्रचार का शिविर चला रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने इस विशाल एवं व्ययसाध्य कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान गोविन्द सिंह भण्डारी के सहयोग की सराहना की। स्वामीजी का व्याख्यान पूरा होने पर उन्होंने लोगों में जोश भरने के लिए अनेक नारे लगाये जिनमें से कुछ थे, "कन्या भ्रूण हत्या मिटायेंगे, जातिवाद मिटायेंगे, आर्य राष्ट्र बनायेंगे, पाखण्डवाद मिटायेंगे, वैदिक धर्म फैलायेंगे, गोहत्या बन्द करो, बन्द करो और पाखण्डवाद मिटाने को ऋषि दयानन्द आये थे।" इन जयघोषों व नारों को लोगों ने इतने उत्साह से लगाया कि हम भी अपने आप को रोक न सके और हमने भी अपनी पूरी शक्ति से इन नारों में भाग लिया। शोभा यात्रा अनेक मार्गों से होती हुए व ऋषि का जयघोष करती हुई शिविर में पहुंची जहां स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त विचार रखे। आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम व हमारे अनेक साथी यहां विपरीत परिस्थितियों में विगत लगभग 1 माह से तप कर रहे हैं। भीषण गर्मी, आंधी व अनेक विपरीत स्थितियों को यहां हमारे साथियों ने सहन किया है। स्वामीजी ने कहा कि यह हमारे शिविर का स्थान ऐसा हैं जहां महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनाओं, आत्मा व परमात्मा का चिन्तन करने पर ध्यान लगता है। यहां विगत दिनों चारों वेदों के सभी मन्त्रों से यज्ञ सम्पन्न हुंआ है। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी ने यहां की भूमि व वातावरण को वेदों की ऋचाओं से गुंजा दिया है। स्वामी आर्यवेश जी ने जयघोष लगाया तो भावविभोर लोगों ने वैदिक धर्म की जय की ध्वनि अपनी पूरी शक्ति से

की जिससे सभा मण्डप का वातवारण ऋषि भक्ति के रंग में रंग गया। स्वामी जी ने आर्यसमाज सागर मध्यप्रदेश का परिचय देते हुए बताया कि सागर ऐतिहासिक नगर है और वहां एक शानदार आर्यसमाज है। वहां से 6–7 लोग हरिद्वार में सार्वदेशिक सभा की बैठक व शोभा यात्रा में भाग लेने पधारे हैं। उन्होंने अर्धकुम्भ–मेले पर की गई व्यवस्था में सहयोग के रूप में ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि स्वामी आर्यवेश जी को प्रदान की। अन्य कुछ लोगों ने भी अपनी–अपनी ओर से सहयोग राशियां प्रदान की जिनका परिचय स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धालुओं को कराया।

आर्य विद्वान पं. सत्यव्रत सामवेदी ने शोभायात्रा के मध्य एक वाहन की छत पर बैठकर अपने प्रवचन में योगेश्वर श्री कृष्ण की चर्चा करते हुए कहा कि वह गोपाल थे। गोपाल गाय का पालन करने वाले को कहते है। अतः योगेश्वर श्री कृष्ण जी गोपालन करते थे। हमें उनसे प्रेरणा लेकर गोपालन करना चाहिये। श्री सामवेदी जी ने कहा कि ईश्वर यज्ञमय है, इसलिए हमें व आप को भी यज्ञ बनना है। उन्होंने कहा कि यदि हम सब यज्ञ करेंगे तो देश में सूखा नही पड़ेगा, भुखमरी नहीं होगी व किसान आत्म हत्या नहीं करेंगे। गोरक्षा से किसान समृद्ध होगा। अनेक राज्यों में शराब बन्दी की भी उन्होंने चर्चा की और सारे देश में शराबबन्दी किए जाने की मांग की। श्री सामवेदी जी ने श्री गुरुचरण छागला जी की चर्चा कर बताया कि उन्होंने शराब बन्दी के लिए आमरण अनशन किया और अपने प्राण दिये। आपने कहा कि आज देश में बहुत सारे समुदाय हैं परन्तु यहां आर्यसमाज का एक ओ३म् का ही झण्डा चहुंओर फहरा रहा है जो पाखण्ड खण्डन व ऋषि की दिग्विजय का सूचक है। उन्होंने कहा कि जब तक हमारे आर्यसमाज जीवित है, हमारे देश का भविष्य उज्जवल है। अपने विचारों को विराम देने से पूर्व उन्होंने कहा कि हमारा सफर तब तक चलेगा जब तक कि हम पूरे विश्व को आर्य नहीं बना लेंगे।

देश विदेश में आर्यसमाज के प्रचारक आर्य विद्वान श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिस प्रकार के विचारों व ज्ञान की आवश्यकता आज देश व समाज को है, उस प्रकार के विचारों को आप यहां हरिद्वार के अर्धकुम्भ के शिविर के अवसर पर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी है। आप इतिहास पर दृष्टि डालिये। विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं। उन्होंने अनेक अच्छे कार्य किए हैं। यदि उन सभी महापुरुषों की तुलना स्वामी दयानन्द जी से करेंगे तो पायेंगे

की ऋषि दयानन्द जी का स्थान बहुत ऊंचा है। उनके विचार सभी विषयों पर बहुत ऊंचे हैं और साथ हि मानव जाति के लिए कल्याणकारक भी हैं। ऋषि दयानन्द के विचारों का अध्ययन करने पर यह तथ्य भी सामने आता है कि उनके विचार विज्ञान पर आधारित हैं। उनके विचारों में विज्ञान विरोधी कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि विश्व के विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के वेद विषयक विचारों पर अपनी सम्मति दी है जो कि अतीव महत्वपूर्ण व प्रशंसा से युक्त है। आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने योगी अरविन्द के विचारों को प्रस्तुत किया। अरविन्द जी ने कहा है कि ऋषि दयानन्द को वेदों के समझने की कुंजी प्राप्त थी। वेद के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द को उन्होंने पर्वतों की सबसे ऊंची चोटी की उपमा देकर गौरवान्वित किया है। श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, राम व कृष्ण के भक्तों ने अपने इन गुरुओं की मट्टी पलीद की। ऋषि दयानन्द ने इन महापुरुषों को कीचड़ से निकाला और यह सब पतित पावन बने। श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द तो सर्वत्र पावन ही पावन थे। महर्षि दयानन्द एक ऐसे अनोखे ऋषि थे जिन्होंने अपनी पूजा नहीं चलाई और देश की भलाई के लिए अपनी राख को भी किसी किसान के खेत में खाद के रूप में उपयोग करने की बात कही थी। श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि आज लोग हमारा स्वागत, सम्मान व सत्कार करते हैं परन्तु हमारे ऋषि का स्वागत व सम्मान तो लोग पत्थर, धूल, तलवार व विष देकर करते थे। विद्वान वक्ता ने कहा कि हम जो अच्छे विचार व उपदेश सुनें उनका मनन करें व उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। उन्होंने कहा कि संसार की सभी समस्यायें मत, पन्थ व सम्प्रदायों की देन हैं। शराब और गोहत्या की चर्चा कर इन शराब व गोमांसाहार के व्यस्नों को उन्होंने हानिकारक व निन्दनीय बताया। महर्षि दयानन्द जी द्वारा बनाये गये आर्यसमाज के शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति के नियम व इससे होने वाले लाभों की चर्चा भी उन्होंने की और अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदप्रचार करने के लिए आर्यसमाज रूपी वृक्ष लगाया था। श्री धर्मपाल आर्य जी का व्याख्यान आरम्भ होने से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश की ओर से शाल ओढ़ाकर उनका सम्मान भी किया गया।

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून की विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने अपने व्याख्यान का आरम्भ ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात तपसोऽध्यजायत मन्त्र से किया। उन्होंने कहा कि हम सब हरिद्वार में वेद प्रचार के लिए उपस्थित हुए हैं। वेद प्रचार करके हमें अज्ञान व अन्धकार को दूर करना है। महर्षि दयानन्द की भी हमारे लिए वेद प्रचार करने की आज्ञा है। हमें लोगों के अज्ञान में डूबने के कारणों को जानकर उन्हें अज्ञान में न पड़ने के लिए प्रचार करना है। जो लोग अज्ञान में भटक रहे हैं उन्हें अज्ञान से बाहर निकालना है। विदुषी वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार है। परमात्मा ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान दिया है। वेदों ने मनुष्यों को सुखी व कल्याणप्रद जीवन जीने की कला सिखाई है। वेद संगच्छध्वं अर्थात् मिल कर चलने का सन्देश देते हैं। आर्यसमाज अच्छे लोगों का संगठन है। हम सब भारत माता के पुत्र व पुत्रियां हैं। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज का व्यापक प्रचार प्रसार हो तो लोग एक ईश्वर को मानने

लगेंगे। वेद गो माता और अन्य सभी पशुओं की रक्षा का सन्देश देते हैं। उन्होंने कहा आजकल लोग संस्कारों से विहीन होने के कारण मातष्शक्ति का सम्मान नहीं करते। महर्षि दयानन्द ने स्त्री को यज्ञ की ब्रह्मा बनने का सम्मान देकर गौरवान्वित किया है। विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द न आते तो हम वेदों के मन्त्रों के अर्थ न जान पाते और न हि यज्ञ की ब्रह्मा बन पाते। उन्होंने कहा कि आज नारियां यज्ञों की ब्रह्मा बन नहीं है जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। उन्होंने उज्जैन में आयोजित कुम्भ मेले की चर्चा की और बताया कि वहां होने वाले सभी वष्हत् यज्ञों की ब्रह्मा स्त्रियों को ही बनाया गया है जिसमें से वह भी एक हैं। उन्होंने संगठन को सुदष्ण करने और वेद प्रचार को बढ़ाने का आह्वान किया। डा. अन्नपूर्णा जी ने भारत को विश्वगुरु और देश को आर्य राष्ट्र बनाने का आह्वान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री कमलनारायण जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि महर्षि दयानन्द सर्वोत्तम जीवन जीने की शैली वा विद्या Art of Living के प्रणेता थे। महर्षि के इन विचारों से विश्व में क्रान्ति हुई। विद्वान वक्ता ने आधुनिक जीवन पद्धति की चर्चा की और इसे ग्लोबल वार्मिगं जैसी पर्यावरण की समस्या का कारण बताया। लातूर और मराठवाड़ा में सूखे की स्थिति व वहां जल के अभाव का उल्लेख कर उन्होंने इसे प्रकृति का असन्तुलन बताया। उन्होंने आज के लोगों को विशेषण दिया 'सम्पन्न जीवन विपन्न विचार' और कहा कि आज के समाज व विश्व में विचारों की विपन्नता होने के कारण नाना समस्यायें पैदा हो रही है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य और अपने अन्य ग्रन्थों में विचार प्रस्तुत किये हैं जिनसे वर्तमान समय की अनेक समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। विद्वान वक्ता ने महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य 11/3 का उल्लेख कर कहा कि वायुमण्डल में सुगन्धित पदार्थों से यज्ञ करना चाहिये व वनस्पतियों के गुण–धर्म जानकर उनका शारीरिक चिकित्सा में उपयोग कर संसार को सुखी व समस्याओं से रहित बनाया जाना चाहिये। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भरत जी के संवाद की चर्चा कर उन्होंने बताया कि रामचन्द्र जी ने भरत जी से पूछा था कि तुमने यज्ञ कराने वाले विद्वान पुरुषों की नियुक्ति की या नहीं? वायु प्रदुषण की चर्चा कर श्री कमल नारायण जी ने कहा कि सरकारी स्तर पर यज्ञ होने से पर्यावरण विषयक शुभ परिणाम मिल सकते हैं अत यज्ञ किया जाना चाहिये। लोगों को उस राजनीतिक दल को वोट देकर सरकार बनानी चाहिये जिसने अपने घोषणा पत्र में देश भर में सरकारी व्यय से यज्ञ करने का वचन दिया हो। उन्होंने कहा कि यदि धनायन वाले वायु कणों की उपस्थिति में श्वांस लेंगे तो तनाव व अनिद्राग्रस्त होकर रोगग्रस्त सकते हैं। इसके विपरीत ऋणायन वाली वायु के कणों में श्वांस लेने से मनुष्य को सुख, चैन, शान्ति का लाभ होता है व मनुष्यों की सारी बिमारियां दूर होती हैं। विद्वान वक्ता ने अग्निहोत्र यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण भी किया और कहा कि महर्षि दयानन्द के यज्ञ विषयक विचारों पर वैज्ञानिक अनुसंधान किया जाना चाहिये और उसके आधार पर मनुष्यों का जीवन सुखी बनाने के लिए उनका व्यवहार व उपयोग किया जाना चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि हमें यज्ञ व संस्कारों के माध्यम से वेदों की विचारधारा को आगे बढ़ाना चाहिये। व्याख्यान से पूर्व स्वामी आर्यवेश जी ने श्री कमलनारायण, प्रधान छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा का परिचय देते हुए बताया गया कि उन्होंने पर्यावरण

विज्ञान पर पीएचडी की है। उनका शोध प्रबन्ध प्रकाशित भी हो चुका है। आपने अर्धकुम्भ मेले की व्यवस्था के लिए सार्वदेशिक सभा को ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि भी भेंट की।

इस अवसर पर देहरादून के पं. उम्मेदसिंह विशारद ने 'देश धर्म व जाति की जिसने बचाई लाज है, वह आर्यसमाज है जी आर्यसमाज है' गीत प्रस्तुत किया। श्री किशनलाल जी आर्य, भोपाल, मध्य प्रदेश ने भी 'वेद विरुद्ध जितने मजहब थे खोल दी है उनकी सबकी पोल, स्वामी जी ने चलाया है 14 गोली का पिस्तौल' गीत गाकर लोगों में जोश व उत्साह उत्पन्न किया। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री किशनलाल जी की प्रशंसा करते हुए उनके अनेक गुणों पर प्रकाश डाला। महाशय राजपाल जी भजनोपदेशक ने 'धक्के खाते रहे हैं दुनियां क लोगों मिल करके बोलो ओ३म् ओ३म् ओ३म् प्यारा ओ३म् ओ३म् ओ३म्' एवं 'यदि नहीं टंकारे आती फाल्गुन की शिवरात हमारी कौन पूछता बात' भजनों को

प्रस्तुत किया। आर्यजगत के एक अन्य भजनोपदेशक श्री रुहेल सिंह जी ने भी अनेक प्रभावशाली भजन प्रस्तुत किए।

यह उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के तत्वावधान में अर्धकुम्भ हरिद्वार के मेले में 20 मार्च से निरन्तर प्रचार चलता रहा है। 13 अप्रैल, 2016 को मेला समाप्त हो रहा है। इस अवधि में आर्यसमाज के अनेक लोगों ने यहां की विपरीत परिस्थितियों में सभा के शिविर में रहकर घोर तप किया है जिनमें से एक श्री दिक्षेन्द्र आर्य भी हैं। आप जिस उत्साह वह श्रद्धाभक्ति से कार्य करते हैं, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। उनके कार्य व सेवा भावना को देख व अनुभव कर हममें उनके प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हुई है। इससे यह भी सन्देश

मिला कि आर्यसमाज के लोगों को राग–द्वेष छोड़कर परस्पर मिलकर व एक दूसरे को परख कर ही किसी के प्रति अपनी कोई निजी राय बनानी चाहिये। ऐसा करके हम संगठन को मजबूत करने के साथ आर्यसमाज के प्रचार को भी बढ़ा सकते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि हम दूसरों के अवगुणों की चर्चा करने के स्थान पर अपने अवगुणों पर ध्यान दे और उन्हें दूर करने का प्रयास करें तो यह आर्यसमाज के हित में होगा। यह बात अवश्य है कि असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन आवश्यक है परन्तु असत्य के खण्डन में हमारा अपना असत्य भी सम्मिलित है। सार्वदेशिक सभा इस बात के लिए आर्यसमाज व आर्यजगत के सभी ऋषिभक्तों की ओर से धन्यवाद की पात्र है जिसने महर्षि दयानन्द द्वारा सन् 1867 को स्थापित कुम्भ मेले में प्रचार की इस परम्परा का पूरी श्रद्धा व निष्ठा से पालन किया। इस शिविर व इसके कार्यकलापों में सहयोग करने वाले व इससे किसी भी रूप में जुडें बन्धुओं सहित सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्री गोविन्दसिंह भण्डारी एवं श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी आदि सभी महानुभावों के प्रति भी हम अपनी कृतज्ञता व धन्यवाद करते है जिन्होंने अपने जीवन का समय, श्रम व धन आदि इस कार्य में लगाकर इसे सफल बनाया है।

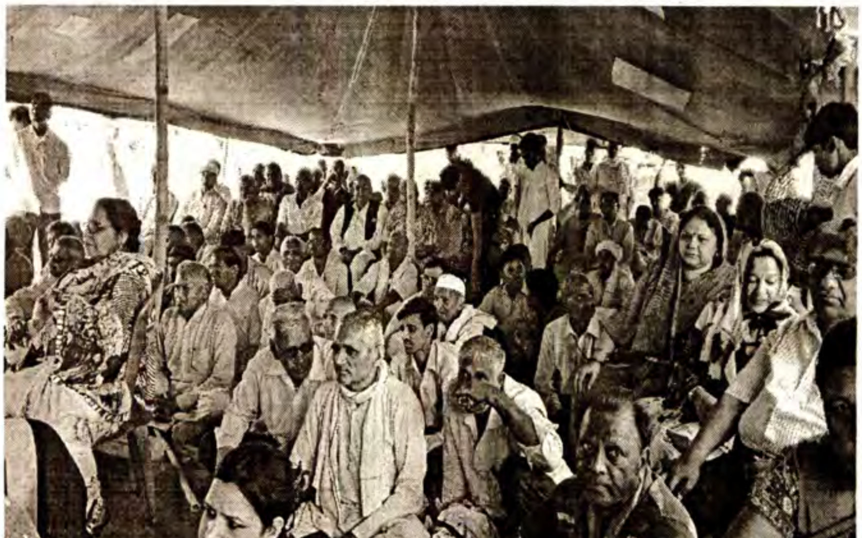

–मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून

लातूर आदि स्थानों में भयंकर सूखे के परिप्रेक्ष्य में–

'यज्ञ से वर्षा आदि कामनाओं की पूर्ति'

क्या यज्ञ और वषष्टि का परस्पर सम्बन्ध है? अवश्य है, इसलिए कि वेद और गीता में इनका वर्णन मिलता है। गीता में भगवान कष्ण ने सूखे को ध्यान में रखकर अर्जुन को उपदेश नहीं दिए

थे। न हि सर्वव्यापक सषष्टिकर्त्ता ईश्वर ने सूखा पड़ने के बाद समाधान के रूप में वेदोपदेश किया। यह तो सषष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को अपने कर्तव्यों व धर्म पालन के लिए दिया गया सनातन, शाश्वत् व नित्य ज्ञान है। आईये, पहले गीता में वर्णित वषष्टि जो बादल अर्थात् पर्जन्य से होती है, उसका उल्लेख कर क्या कहा गया है, यह जानते है। गीता के इस श्लोक 3/14 'अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।' में कहा गया है कि सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वषष्टि से होती है, वषष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। इस श्लोक में यज्ञाद्भवति पर्जन्यो अर्थात् वषष्टि अर्थात् वर्षा वा बारिश यज्ञ से होती है, यह बात योगेश्वर श्री कष्ण ने अर्जुन को बताई है। इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि यदि हम यज्ञ करते हैं तो इसके प्रभाव से वर्षा हुआ करती है। दूसरा यह भी है कि यदि वर्षा न हो रही हो, तो उचित मात्रा वा परिमाण में यज्ञ करने से वर्षा कराई जा सकती है। यहां यह बता दें कि ईश्वरीय ज्ञान वेदों एवं परवर्ती वेदानुकूल साहित्य के अनुसार गषहस्थियों के लिए अग्निहोत्र व अग्नि–गोघष्त–ओषधि–वनस्पति आदि पदार्थों से दैनिक यज्ञ करने का विधान है। आजकल महाराष्ट्र के लातूर व मराठवाड़ा सहित देश के अनेक भाग सूखे की चपेट में हैं। यहां पीने व अन्य प्रयोग के लिए जल का सर्वथा अभाव हो गया है। अतः पीने व अन्य उपयोग के लिए यहां जल की अकूत धनसाध्य वैकल्पिक व्यवस्था तो की जा रही है परन्तु यज्ञ द्वारा वर्षा कराने पर किसी सरकारी व अन्य संस्था का ध्यान नहीं है। कारण कि यह देश धर्मनिरपेक्ष है और यदि वेद के उपायों से वर्षा करा ली जाति है तो इससे किसी एक व अनेक दलों के वोट बैंक पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

आर्यसमाज में यज्ञ विज्ञान पर कार्य करने वाले भोपाल मध्य प्रदेश में एक विद्वान श्री वीरसेन वेदश्रमी हुए हैं जिन्होंने देश के अनेक भागों में वषष्टि वा वर्षा–यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न किए थे। आर्यसमाज के अन्य विद्वान स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने तो वर्षा कराने के लिए किए जाने वाले यज्ञ की विधि की पुस्तक 'वषष्टियज्ञ पद्धति' भी लिखकर प्रकाशित की थी परन्तु हमारे देश मे अनुसंधान के नाम पर करोड़ो अरबों रूपये व्यय किये जा सकते हैं परन्तु वेदों की ओर से सभी राजनैतिक दलों वा सरकारों ने आंखें मूंदी हुई हैं। हम अनुभव करते हैं कि यह उदासीनता देश व जनता के हितों की दषष्टि से उचित नहीं है। हम वेद पर आते हैं और देखते हैं कि

वेद वर्षष्टि व यज्ञ पर अपनी क्या शिक्षा देते हैं। 'ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुवोढावानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।', यह यजुर्वेद का 22/22 मन्त्र है। इसमें जो 'निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु' तथा 'योगक्षेमो नः कल्पताम्' शब्द आये हैं वह यज्ञ और वर्षा का सम्बन्ध बता रहे हैं। 'नः निकामे निकामे पर्जन्यः वर्षतु' का अर्थ है कि हमारी निश्चित कामना होने पर बादल वर्षा करने वाले हों। जब–जब हमें अन्नादि के दर्षष्टिकोण से वर्षा की आवश्यकता हो, तब–तब हमारे राष्ट्र में पर्जन्य–देव (वर्षा कराने वाले देव) वर्षा कराने वाले हों वा वर्षा करायें। 'योगक्षेमो नः कल्पताम्' में कहा गया है कि हमारा योग–क्षेम सिद्ध हो। अप्राप्त पदार्थ वा इच्छित वस्तु की प्राप्ति योग हैं। यहां सूखे की स्थिति में वर्षा अप्राप्त है उसको प्राप्त कराने के लिए वर्षा की प्राप्ति का होना ही 'योग' है। जो हमें प्राप्त हैं उसका रक्षण 'क्षेम' कहलाता है। यहां हमें प्राप्त सर्षष्टिगत पर्यावरण आदि सभी पदार्थों व वातवरण को सुरक्षित रखना है और वर्षा होने के बाद वर्षा चल को भी कुएं, तालाबों व जलाशयों आदि में सुरक्षित रखना है। 'योगक्षेम' का अर्थ है कि आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि ा व उनका रक्षण। यजुर्वेद के भाष्यकार पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार कहते हैं कि राष्ट्र में सबका 'योगक्षेम' ठीक से चले, यही राष्ट्र की उत्तमता है। आदर्श राष्ट्र यही है। अतः हम ईश्वर से प्रार्थना करके, वर्षा आदि की इच्छा करके, यज्ञ करके, वर्षा में सहायक यज्ञ का वैज्ञानिक रीति से अनुसंधान करके निकामे निकामे अर्थात् जब जब जहां जहां चाहें वर्षा कराने में समर्थ हो सकते हैं। आवश्यकता इस बात है कि हमें वेदों की ओर लौटना होगा जिसका विवेक व शक्ति हमारे कर्णध ारों के पास शायद नहीं है।

यज्ञ करने से वर्षा कराई जा सकती है, इसकी सम्भावना गीता व वेद के मन्त्र अपने निश्चयात्मक ज्ञान के आधार पर घोषित कर रहे हैं। हम यहां वर्षष्टि यज्ञ के सम्बन्ध में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, अनेक वैदिक ग्रन्थों के प्रणेता और सामवेद के अपूर्व भाष्य के ऋषितुल्य मुमुक्ष विद्वान डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के वर्षष्टि यज्ञ पर लिखे गये शब्दों को प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं कि 'वर्षष्टि–यज्ञ एक विज्ञान है। इस विज्ञान का जो ज्ञाता हो, उसे ही यह यज्ञ कराने का अधिकार होना चाहिए। ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 98 को निरुक्तकार यास्काचार्य ने वर्षकाम–सूक्त नाम दिया है (वर्षकाम सूक्त का अभिप्राय वर्षा की कामना वाले मन्त्रों का सूक्त व संग्रह है)। इसमें अनावर्षष्टि होने पर (जैसी कि लातूर, मराठवाड़ा व देश के अन्य भागों में है) 'देवापि' गुण वाले विद्वान् के पौरोहित्य में वर्षष्टियज्ञ कराकर वर्षा होने का वर्णन है। देवापि वह विद्वान् है, जो यज्ञ द्वारा पर्जन्य देव को भूमि पर प्राप्त करने या बरसाने का विज्ञान जानता है। ऋग्वेद की एक ऋचा (ऋग्वेद 5.83.9) में अतिवर्षष्टि होने पर उसे रोकने की चर्चा भी मिलती है। इस वर्षष्टियज्ञ–विज्ञान पर अधिकाधिक अनुसंधान होना चाहिए और अनावर्षष्टि या अतिवर्षष्टि होने पर अधिकारी विद्वानों द्वारा राजकीय स्तर पर वर्षष्टि–यज्ञ कराए जाने चाहिएं। आज वैज्ञानिक जगत में अन्तरिक्ष में बदलों पर रासायनिक द्रव्य छिड़ककर वर्षा कराने के सफल परीक्षण किये गए हैं।' उन पदार्थों को जानकर इनका भी यज्ञ में उपयोग किये जाने पर विचार किया जाना चाहिये।

हम यह भी कहना चाहते हैं कि यह सर्षष्टि स्वतःसर्षजित व रचित नहीं है अपितु एक सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सच्चिदानन्द सत्ता द्वारा बनाई गई है। वही सत्ता इस सर्षष्टि को धारण किए हुए है जिससे कि यह सुचारू रूप से चल रही है। जीवात्मा की भांति ईश्वर चेतन सत्ता है। वह हमारी भावनाओं व प्रार्थनाओं को प्रत्येक क्षण सुनता व उसे हमारी पात्रता व क्रियाओं के अनुरूप पूरा करता है। सर्षष्टि का कर्ता होने से यह समस्त सर्षष्टि उस ईश्वर के वश वा नियंत्रण में है। यदि हम अनावर्षष्टि वा सूखा होने पर उससे प्रार्थना व यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्य करेंगे वा अतिवर्षष्टि होने पर वर्षा को रोकने आदि की प्रार्थना करेंगे तो उसका निश्चित ही सकरात्मक परिणाम ईश्वर हमें प्रदान करेगा। सर्षष्टि जड़ अवश्य है परन्तु ईश्वर के नियन्त्रण में है। इसका उदाहरण है कि हमारा शरीर पंच भौतिक तत्वों से मिलकर बना है और गुण–कर्म–स्वभाव से यह जड़ है। जड़ होने पर भी स्वस्थ अवस्था में यह शरीरस्थ आत्मा के आदेशों व निर्देशों का पूरा पूरा पालन करता है। इसी प्रकार से शरीरस्थ जीवात्मा से इस भौतिक सर्षष्टि को परमात्मा की प्रार्थना व यज्ञ आदि के द्वारा निकामे–निकामे=अपनी इच्छा व कामना के अनुरूप किया जा सकता है। आवश्यकता हमें अपने समस्त ध ार्मिक पूर्वाग्रहों व स्वार्थों को छोड़ने की है। यदि देश व विश्व के सभी लोग पूवार्वग्रहों व स्वार्थों को छोड़ दें तो राम राज्य व आदर्श राज्य पर्षथिवी पर उपस्थित हो सकता है। यह आदर्श राज्य वेदों की मान्यताओं को व्यवहार में लाने पर ही बनाया जा सकता है। महाभारत काल के लगभग 1.960852 अरब वर्षों तक वैदिक सिद्धान्तों से पोषित राज्य पूरी पर्षथिवी पर रहा ही है तो आगे भी हो सकता है।

वर्तमान में आर्यसमाज में वेदों व यज्ञ के मर्मज्ञ विद्वानों में हम डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. सोमदेव शास्त्री, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डा. धर्मवीर,

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती और स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी आदि यज्ञप्रेमी अद्वितीय महान हस्तियां हैं। यह लोग समय–समय पर स्थान–स्थान पर वृहत यज्ञों को सम्पादित करते रहते हैं। यदि यह आपस में गोष्ठी कर वृष्टियज्ञ विषयक प्रयास करें तो हमें आशा है कि सफलता मिल सकती है। इन विद्वानों को अपने ज्ञान, अनुभव व कार्यों से देशवासियों का मार्गदर्शन करना चाहिये। हमें यह भी उचित प्रतीत होता है कि देश व विदेश के सभी सहस्रों आर्यसमाजों में दैनिक व साप्ताहिक यज्ञ होते हैं, यदि वहां प्रतिदिन सूखा प्रभावित क्षेत्रों में वर्षा की प्रार्थना व दिव्य भावना के साथ वेदमन्त्रों को बोलकरघृत आदि पदार्थों की आहुतियां दें तो इसके भी सार्थक परिणाम हो सकते हैं। अतः सभी आर्यसमाजों व आर्यसंस्थाओं में होने वाले दैनिक व साप्ताहिक यज्ञों में सूखा प्रभावित क्षेत्रों में वृष्टि होने के लिए ईश्वर से प्रर्थाना सहित कुछ विशेष आहुतियां दी जानी चाहिये।

यज्ञ से वर्षा होती है, यह गीता व वेद के प्रमाणों व पूर्व यज्ञ के विद्वानों के प्रयोगों से सिद्ध है। इस विषय पर पूरी श्रद्धा व निष्ठा से योग्य शोधार्थियों को अनुसंधान करना चाहिये। राज्य व केन्द्र सरकारों को भी इसमें वोट बैंक की राजनीति से उपर उठकर सहयोग ही नहीं करना चाहिये अपितु अपनी प्रमुख व अग्रणीय भूमिका भी निभानी चाहिये। अन्य सभी उपाय भी राज्य व केन्द्र की सरकार कर सकती हैं, इसमें कोई विरोध नहीं है। हमने इस विषय को ज्वलन्त, सामयिक व प्रासंगिक जानकर व अपना कर्तव्य समझकर इसे अपने आज के लेख का विषय बनाया है। आशा है कि सुधी पाठक इस पर सदभावना से विचार करेंगे।

—मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून

आर्य समाज स्थापना दिवस युगादि अवसर पर

आर्य समाज आर.पी. रोड़ ने निकाला भव्य जुलूस

डॉ. मसना चेनप्पा जी

रथारूढ़ होकर जुलूस का नेतृत्व किया

केन्द्रीय मंत्री बण्डारु दत्तात्रेय जी ने संदेश देकर जुलूस की रवानगी की

आर्य समाज आर.पी.रोड़ से जुलूस प्रारम्भ होकर सिकन्द्राबाद नगर की मुख्य सड़कों से होता हुआ आर्य समाज द्वारा संचालित हिन्दी महाविद्यालय के प्रांगण में समाप्त हुआ। जहां पर जुलूस का नेतृत्व कर रहे है डॉ. मसन्ना चेनप्पा अपने संदेश में कहा देश की बदलती परिस्थियों को देखते हुए आर्य समाज को एक होना है और मज़बूत भी होना है। सांस्कृतिक आँदोलन मात्र आर्य समाज ही कर सकता है तथा देश और समाज की रक्षा कर सकता है। नगरद्वय की आर्य समाजों ने भारी संख्या में भाग लेकर जुलूस की शोभा बढ़ाई। आर्य समाज के प्रधान मामिडी श्रीनिवास जी व अन्य अधिकारि जुलूस में उपस्थित रहे।

पंडित नरेन्द्रजी की जयन्ती सम्पन्न

कोठी, हैदराबाद स्थित पंडित नरेन्द्रजी की मूर्ति के पास आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से नरेन्द्रजी के जन्म दिवस के उपलक्ष में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभा तथा आर्य समाजों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। यज्ञ के पश्चात सुल्तान बाज़ार व्यापार संघ के अध्यक्ष श्री गोविंद राठी जी ने पंडित नरेन्द्रजी को श्रद्धांजलि दी

डा. भीमराव अम्बेदकर जी की 125 वीं जयन्ती पर

'आर्यसमाज और डा. भीमराव अम्बेडकर'

"I like the religion that teaches liberty, equality and fraternity."
- Dr. B. R. Ambedkar

डा. भीमरावजी अम्बेडकर आजकल देश व विश्व में एक जाना माना नाम है। आपने भारत के संविधान के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसके साथ ही आप भारत में प्रथम कानून मंत्री के रूप में भी आदष्त रहे हैं। डा. अम्बेदकर जी की पष्ठभूमि एक दलित परिवार से थी। दलित होने के कारण आपको हिन्दू द्विजों की उपेक्षा एवं पक्षपात पूर्ण व्यवहार का शिकार होना पड़ा। महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद शायद पहले व सबसे अधिक प्रभावशाली सुधारक रहे जिन्होंने वेदादि शास्त्रों के आधार पर जन्मना जातिवाद व अस्पर्शयता आदि को वैदिक विचारध ारा व सिद्धान्तों के प्रतिकूल सिद्ध किया था। आपने हिन्दू पौराणिक ब्राह्मण वर्ग द्वारा स्त्री व दलितों से छीने गये वेदों के अध्ययन के अधिकार को न केवल लौटाया अपितु इसके समर्थन में अनेक प्रमाण देने के साथ आपके अनुयायियों द्वारा स्थापित गुरुकुलों व अन्य शिक्षण संस्थाओं में दलित विद्यार्थियों को प्रवेश दिया और उन्हें हिन्दू पौराणिक ब्राह्मणों से भी अधिक संस्कष्तज्ञ व वेदों का वेदपाठी विद्वान पण्डित बनाया। उनके व उनके अनुयायियों के प्रयासों से देश में जन्मना जातिवाद की दीवारे कमजोर हुई व टूटी और इसके साथ दलितों सहित सभी समुदायों के लोगों को शिक्षा व समाज में समानता के अधिकार मिले। ईश्वरीय ज्ञान वेदों के पुनरुद्धार सहित सामाजिक समानता और सभी प्रकार के सामाजिक सुधारों का श्रेयं भी महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज को है।

14 अप्रै, सन् 1891 और मध य प्रदेश का महूथान भारत के संविध ाान निर्माता डा. भीमराव अम्बेडकर जी की जन्मतिथि जन्मभूमि है। डा. अम्बेडकर जी की 125 वीं जयन्ती पर हम आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान डा. कुशलदेव शास्त्री का "आर्यसमाज और डा. अम्बेडकर" विषयक लेख प्रस्तुत कर रहे हैं जिसें डा. अम्बेडकर के आर्यसमाज के अनुयायियों से सम्बन्ध व सहयोग सहित उन पर आर्यसमाज के प्रभाव को रेखंकित किया गया है। विद्वान लखक ने लिखा है कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वमी दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1825 में और बलिदान 1883 में हुआ था। आर्यसमाज की स्थापना के 16 वर्ष बाद और स्वामी दयानन्द के देहावसान के लगभग 8 वर्ष बाद 14 अप्रैल, 1891 को भारतरत्न डा. भीमराव अम्बेडकर का महू (मध यप्रदेश) में जन्म हुआ। यह तो स्पष्ट ही है कि माननीय डा. अम्बेडकर के काल में स्वामी दयानन्द शरीररूप में विद्यमान नहीं थे, पर आर्यसामाजिक आन्दोलन के रूप में उनका यशःशरीर तो जरूर विद्यमान था। डा. भीमराव अम्बेडकरजी की ग्रन्थ सम्पदा इस बात की साक्षी है कि वे स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज तथा उनके अनुयायियों की गतिविध्यिों से अच्छी तरह परिचित थे। प्रस्तुत काल में आर्यसमाज का आन्दोलन अपने पूरे यौवन पर था, जिसका प्रभाव डा. अम्बेडकर और उनके युग पर निश्चित रूप से पड़ा है। डा. कुशलदेव शास्त्री ने यह पंक्तियां डा. अम्बेडकर और आर्यसमाज के परस्पर सम्बन्धों को उपलब्ध जानकारी के आधार पर प्रस्तुत किया है।

जैसे स्वामी दयानन्द गुजराती होते हुए भी मूलतः औदीच्य तिवारी ब्राह्मण माने जाते थे, वैसे ही डा. अम्बेडकर भी मध्यप्रदेश में जन्म लेने के बावजूद मूलतः तथाकथित शूद्र (महार) कुलोत्पन्न महाराष्ट्रीय के रूप में सुप्रसिद्ध थे। कालान्तर में यह दोनों विभूतियां राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय महापुरुष के रूप में भी सुप्रसिद्ध हुईं। जिस समय महाराष्ट्र में (तत्कालीन मुम्बई राज्य में) 'रानाडे–फुले युग' का अस्त हो रहा था, उसी समय वहां श्री सयाजीराव गायकवाड़, राजर्षि शाहू महाराज तथा डा. अम्बेडकर के युग का उदय हो रहा था। यह दूसरी पीढ़ी भी अपनी पूर्ववर्ती दयानन्द–रानाडे–फुले आदि महापुरुषों की कार्यप्रणाली से प्रभावित और प्रेरित रही है। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' से अधिक प्रभावित थे, तो डा. अम्बेडकर महात्मा फुले और उनके द्वारा स्थापित 'सत्य शोधक समाज' से। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज आर्यसमाजी होते हुए भी सत्य शोधक समाज के भी सहयोगी और प्रशंसक रहे, तथा डा. अम्बेडकर महात्मा फुले के शिष्य होते हुए भी स्वामी दयानन्द और उनके आर्यसमाजी आन्दोलन के प्रशंसक होने के साथ–साथ समालोचक भी हैं, पर उन्हें आर्यनरेश द्वय श्री गायकवाड़ और राजर्षि शाहू की तरह आर्यसमाज आन्दोलन के सहयोगियों में नहीं खड़ा किया जा सकता। हां ! आर्यसमाजी आन्दोलन के डा. अम्बेडकर हमेशा से ही हितैषी रहे हैं।

डा. अम्बेडकर के लिए स्वामी दयानन्द की तुलना में महत्मा फुले अधि ाक आराध्य रहे। डा. अम्बेडकर ने गौतम बुद्ध, सन्त कबीर और महात्मा फुले को महापुरुष त्रयी को अपना गुरु माना है। संस्कष्त व राष्ट्रभाषा हिन्दी की तरह प्रान्तीय स्तर पर मराठी में काम–काज न कर पाने के कारण महाराष्ट्र में आर्यसमाज का आन्दोलन उतना प्रभावी ढंग से न चल सका जितना कि उत्तर

भारत में। राजर्षि शाहू महाराज के अनुसार 'ब्राह्मण नौकरशाही' के कारण महाराष्ट्र में आर्यसमाज का आन्दोलन प्रभावी नहीं हो सका।

डा. अम्बेडकर जी की शिक्षा में बड़ौदा नरेश जी का सहयोग रहा है। इण्टर पास करने के बाद डा. भीमराव अम्बेदकर को बी.ए., एम.ए., पी.एच,डी., डी.एस.सी. (लन्दन), एल.एल.डी., बार–एट–ला, जैसी उपाधियों से विभूषित और प्रकाण्ड पण्डित बनाने में आर्यसमाजी आन्दोलन का, प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप में, अविस्मरणीय योगदान रहा है। इस बात को और कोई जाने या न जाने स्वयं डा. अम्बेडकर जरूर जानते थे। इसलिए भी उनके ग्रन्थों में आर्यसमाजी आन्दोलन के प्रति विशेष सहानुभूति नजर आती है। जहां आर्य नरेश श्री सयाजीराव गायकवाड़ ने एन् 1912 से 1915 तक डा. भीमराव अम्बेडकर को उच्च विद्या–विभूषित करने के लिए शिष्यवषत्तियां प्रदान कीं और उन्हें अमेरिका भेजा, वहां अपने–आपको हष्दय से आर्यसमाजी कहलानेवाले राजर्षि शाहू महाराज ने भी सन् 1919 से 1922 तक अम्बेडकरजी को विदेश जाकर अध्ययन करने के लिए आर्थिक दषष्टि से सम्पूर्ण सहयोग दिया था।

आर्यनरेश राजर्षि शाहू महाराज ने पत्रकार डा. अम्बेडकर के प्रथम पत्र 'मूकनायक' के संचालन में भी आर्थिक महायता प्रदान की थी और इतना ही नहीं सन् 1920 में माणगांव में सम्पन्न प्रथम अस्पृश्यता परिषद में कोल्हापुर के आर्य नरेश शाहू महाराज ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि 'डा. अम्बेडकर भारतवर्ष के अखिल भारतीय नेता होंगे।' तत्कालीन मुम्बई राज्य के इन दोनों राजाओं के पास जो यह उदारमन और उदारदृष्टि थी, उसकी पृष्ठभूमि में स्वामी दयानन्द खड़े हुए नजर आते हैं। इन दोनों ही आर्यनरेशों के अन्तःकरण पर निर्विवाद रूप से आर्यसमाजी आन्दोलन की विशिष्ट छाप रही है।

स्वामी श्रद्धानन्द (1856–1926) महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी व उनकी शिक्षा पद्धति को मूर्तरूप देने वाले महापुरुष थे। दलितोद्धार एवं जातिपांति उन्मूलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। डा. अम्बेडकर जीग्रामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों से पूर्ण परिचित थे। अपनी 'व्हाट कांग्रेस ए गांधी हैव डन टू दि अन्टचेबल्स' पुक में आपने लिखा है कि 'स्वामी द्धानन्द दलितों के सर्वश्रेष्ठ सहायक र समर्थक थे। अस्पष्श्यता निवारण से म्बन्धित (कांग्रेस की) समिति में रहकर दे उन्हें स्थिरता से काम करने का असर मिल पाता तो निःसन्देह एक बत बड़ी योजना आज हमारे सामने द्यमान होती।' महर्षि दयानन्द के ख्यिात अनुयायी लाला लाजपतराय । आपके गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। यो कारण था की अंग्रेजों के बरबरतापूं लाठीप्रहार से लाला जी की मष्त्यु होने पर उन्होंने उन्हें अश्रुपूर्ण शब्दों । श्रद्धांजलि दी थी। डा. भीमराव जी अबेदकर जनवरी, 1913 में बड़ौदा आा थे और यहां उनका दलितोद्धार क कार्यकरने वाले आर्यसमाज के विद्वा पं. आत्माराम अमष्तसरी जी से परिचय हुआ। अमष्तसरी जी उन्हें उपयुक्त निवास की व्यवस्था होने तक अपने साथ आर्यसमाज वडोदरा में ले आये थे जहां वह एक सप्ताह तक उनके साथ रहे थे। स्वाभाविक है कि पं. आत्माराम अमष्सरी और आर्यसमाज के इस सहवास व निकटता से डा. अम्बेडकर जी को आर्यसमाज की विचारधारा को जानने व समझने का अवसर मिला होगा और उन्होंने आर्यसमाज के दैनिक सन्ध्या व अग्निहोत्र सहित अन्य गतिविधि ायों को भी देखा व समझा होगा और इनको करने के कारणों व होने वाले लाभों को भी जाना होगा।

डा. भीमराव अम्बेडकर जी की जयन्ती पर हमने उनके आर्यसमाज से जुड़े कुछ ही प्रसंगों को प्रस्तुत किया है। आज ही हमने जीटीवी पर एक परिचर्चा में यह तथ्य सुना कि डा. अम्बेडकर ने भारत की राष्ट्रभाषा क्या हो, इस पर अपना मत देते हुए संस्कष्त को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। उनके अनेक विचार सामने आ रहे हैं। हमें यह प्रतीत होता है कि उनके वचनों वा सूक्तियों का एक संग्रह प्रकाशित होना चाहिये जिससे उनके व्यापक दषष्टिकोण को कम समय में जाना व समझा जा सके। टीवी परिचर्चा में हमने यह तथ्य भी सुना कि डा. अम्बेदकर जम्मू कश्मीर के तीन हिस्से करना चाहते थे जिनमें एक एक मुस्लिम कश्मीर और दो तिहाई भाग में दलित व हिन्दू कश्मीर। एक अन्य तथ्य भी बताया गया कि डा. अम्बेदकर अपने ज्ञान व अनुभव के कारण हिन्दू व मुस्लिमों की पूरी पूरी आबादी की भारत व पाकिस्तान में अदला बदली के समर्थक थे। परिचर्चा से यह तथ्य भी सामने आया कि पाकिस्तान बनने पर वहां के मुस्लिमों ने दलित हिन्दुओं को वहां बलपूर्वक रोक लिया था जिससे वह उनका मल–मूत्र आदि साफ कर सकें। अतः हम यह अनुभव करते हैं कि विगत 69 वर्षों की आजादी के काल में उनका वास्तविक स्वरूप व सम्पूर्ण विचार देशवासियों के सामने नहीं आ पायें हैं व राजनीतिक कारणों से उन्हें रोका गया है। हम आशा करते हैं कि वर्तमान समय में डा. अम्बेडकर जी के देशहितकारी विचारों को देशवासियों के सामने प्रस्तुत करने में सफल होगा जिससे उनका सही मूल्यांकन हो सकता है। वैसे भी देश की युवा पीढ़ी में डा. अम्बेडकर के बारे में जानकारी बहुत कम व न के बराबर है जिसे उनके प्रति न्याय नहीं कहा जा सकता। आज डा. अम्बेडकर जी को उनकी जयन्ती पर हम अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हिन्दू समाज से जन्मना जातिवाद और सामाजिक असमानता सदा–सदा के लिए समाप्त हो जाये। क्या हमारे हिन्दू मुख्यतः जन्मना ब्राह्मण भाई व धार्मिक नेता समय व युग के लिए अति आवश्यक इस मानवोचित विचार को कियात्मक रूप देने में सहयोग करने को तैयार हैं? हम यह भी अनुभव करते हैं कि हिन्दू समाज को यह नियम प्रचारित करना चाहिये कि किसी भी मनुष्य के साथ धार्मिक व सामाजिक दषष्टि से पक्षपात, भेदभाव, अस्पर्शयता का व्यवहार नहीं करना चाहिये अपितु अपने व परायों सभी के प्रति स्वात्मवत, प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य (उसके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार) व्यवहार करना चाहिये।

–मनमोहन कुमार आर्य,

सार्वदेशिक सभा का दो दिवसीय साधारण अधिवेशन सम्पन्न

हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर आयोजित वेद प्रचार शिविर भी सफलता पूर्वक सम्पन्न

गौहत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर प्रचण्ड अभियान चलाने की बनी योजना

आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने की महती आवश्यकता

साधारण सभा के महत्वपूर्ण निर्णय

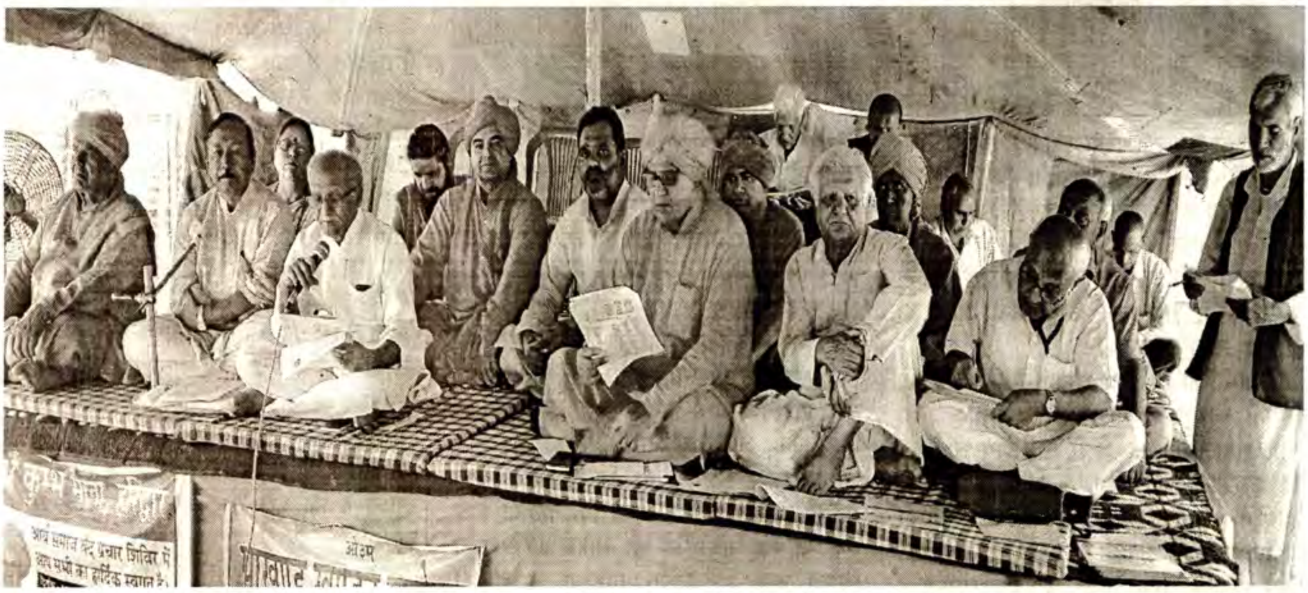

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का दो दिवसीय साधारण अधिवेशन दिनांक ९ से १० अप्रैल, २०१६ को हरिद्वार कुम्भ मेले में सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाये जा रहे शिविर स्थल पर उत्साहपूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। अधिवेशन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संचालन सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया । इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से भारी संख्या में आये प्रतिनिधि उपस्थित थे । अधिवेशन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, उपप्रधान श्रीमती इन्दुबाला, हरिद्वार के स्थानीय विधयक एव प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी कमलानन्द जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी के अतिरिक्त सभा की अन्तरंग के प्रमुख सदस्य श्री विरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, डॉ. लक्ष्मण दास प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, श्री रामानन्द आर्य (पटना), आचार्य सन्तराम आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक वहन प्रवेश आर्या, श्री रमाकान्त सारस्वत आदि ने अपने विचार रखे । इनके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ से श्री कमल नारायण, मध्य प्रदेश विदर्भ के मंत्री श्री जय नारायण आर्य, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री केशव सिंह तोमर, उत्तराखण्ड के मंत्री श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, श्री दामोदर जी पटना आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये ।

इस अवसर पर मुख्य तीन बिन्दुओं पर सहमति बनाकर सभा ने राष्ट्रीय स्तर पर विशाल जन-जागरण अभियान चलाकर प्रचण्ड आन्दोलन चलाने का निश्चय किया । इसके अन्तर्गत सभी प्रान्तों में सांकेतिक धरने प्रदर्शन, जन-जागरण अभियान तथा अन्य कार्यक्रम करने की योजना बनाई गई । कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी प्रान्ती सभाओं की समीक्षा की गई तथा प्रान्तीय सभाओं को सुदृढ़ बनाने की भी योजना बनाई गई । सभा अधिकारी प्रान्तीय सभाओं में जाकर हर सम्भावित स्थिति पर विचार विमर्श करेंगे तथा जमीी स्तर पर योजना बनायेंगे ।

इस अवसर पर विभिन्न आर्य नेताओं ने अपने विचार प्रकट करते हुए गहत्या, नशाखोरी, हिला उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, आर्य लोग भारत के मूल निवासी अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि विषयों पर प्रस्ताव प्रस्तुत किये । सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि गौहत्या, नशाखोरी तथा धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन चलाने के लिए सभी प्रान्तीय सभाओं से सम्पर्क बनाकर सभा अधिकारी पृष्ठभूमि तैयार करेगे । निश्चय किया गया कि आगामी एक वर्ष में एक हजार नई आर्य समाजों का गठन किया जायेगा तथा अधिकाधिक ुवाओं और महिलाओं को आर्य समाज का सदस्य बनाने का अभियान चलाया जायेगा ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि सार्वदेशिक सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती जो २०२४ में आ रही है को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प मनाने की तैयारी में जुट गई है । उन्होंने कहा कि महर्षि ज्म की दूसरी शताब्दी के अवसर पर एक ठोस योजना का क्रियान्वयन होगा जिससे आर्य समाज पूरे विश्व में एक विशेष पहचान पा सकेगा । उन्होंने कहा कि इस दौरान कोशिश की जायेगी कि २०० संन्यासी, २०० वानप्रस्थी तथा २०० नैष्ठिक ब्रह्मचारी दीक्षित किये जायें । स्वामी जी ने बताया कि समारोह की सफलता के लिए कार्य विभाजन की दृष्टि से विभिन्न प्रकल्प कड़े किये जायेंगे

तथा इण्टरनेट तथा अन्य इलेक्ट्रानिक मीडिया के ाध्यम से आर्य समाज की समरत गतिविधियों के अतिरिक्त सम्पूर्ण वैदिक वांङ्मय का प्रस्तुतिकरण किया जायेगा। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की तैयारी के लिए विभिन्न उपसमितियों का गठन करके उन्हें कार्य का दायित्व सौंपा जायेगा।

स्वामी जी ने आर्य समाज के संगठन को जमीनी स्तर पर प्रभावशाली बनाने के लिए आर्य समाज की कार्यशैली में विशेष संशोधन पर बल दिया और कहा कि आर्य समाजों को उपयोगी आर्य समाज बनाना वर्तमान की विशेष आवश्यकता है। उनहोंने कहा कि जिस मोहल्ले, ग्राम, नगर में आर्य समाज है वहाँ पर रहने वाले लोगों के दिल-दिमाग पर यह प्रभाव होना चाहिए कि आर्य समाज उनके लिए एक अत्यन्त उपयोगी समाज है। विशेष पर्वों, महापुरुषों की जयन्ती व पुण्यतिथियो, नव-सम्वतसर आदि को विशेष उत्साह के साथ मनाया जाना चाहिए। इन अवसरों पर जुलूस आदि निकाल कर, गरीब बस्तियों में यज्ञ करके, भाषण प्रतियोगिता, योगसन प्रतियोगिता, लेख प्रतियोगिता तथा अन्य आकर्षक कार्यक्रम आयोजित करके आर्य गतिविधियों में सक्रियता लानी चाहिए। अत्यन्त आवश्यक है कि अपने द्वारा किये गे कार्यक्रमों की सूचना समाचार पत्रों, टी.वी. आदि पर अवश्य देनी चाहिए। कभी-कभी अन्य संगठनों के साथ मिलकर ज्वलन्त मुद्दों पर सामूहिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को सातों दिन सक्रिय रखना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए आर्य समाजों में योग कक्षा चलाना, ट्यूशन की निःशुल्क कक्षायें चलाना, प्रातः सायं संन्ध्या की व्यवस्था करना तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करना आदि से आर्य समाज में सक्रियता लाई जा सकती है। इ्वामी जी ने पुरुष तथा युवतियों के शिविर लगाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आर्य समाज का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है। उन्होंने कहा कि महर्षि के अप्रतिम बलिदान से प्रेरणा लेकर अपने-अपने कार्य में जुट जाना चाहिए और परोपकार, सेवा, सहयोग को अपने कार्यों का आधार बनाकर चलना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए विशेष रूप से गौहत्या, नशाखोरी, पाखण्ड पर गवेशणापूर्वक चर्चा प्रारम्भ करते हुए आह्वान किया कि अबसमय आ गया है कि आर्य समाज को इन मुद्‌दों पर अपनी स्पष्ट दिशा बनानी होगी। उनहोंने कहा कि गौहत्या मात्र एक धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाला विषय नहीं है, अपितु गौहत्या भारत की सम्पर्ण अर्थव्यवस्था को चुनौती देने वाला कृत्य है। इसी प्रकार नशाखोरी एवं धार्मिक पाखण्ड भी हमारे दैनिक जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन ो सीधे प्रभावित करते हैं। प्रो. साहब ने कहा कि हमें अपने कार्यों को बढ़ाकर लम्बी लाइन खींचनी चाहिए किसी की आलोचना के बदले हम कार्य करके ही सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को महर्षि के स्वप्न को पूरा करने के लिए मनसा वाचा कर्मणा आगे बढ़ना होगा तथा सामाजिक बुराइयों को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्प लेना होगा।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने अपने जोशीले वक्तव्य से अधिवेशन को जोश तथा उत्साह से भर दिया। उन्होने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर अपना ओजस्वी भाषणदेते हुए कहा कि आज देश विनाश के कगार पर खड़ा है, क्योंकि हमने महर्षि दयानन्द की बात नहीं मानी यदि महर्षि की बात मान लेते तो जो दशा आज है वह नहीं होगी। उन्होंने कहा कि आज किसान आत्म हत्या कर रहा है, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं, आज की शिक्षा नौजवानों के चरित्र को बिगाड़ रही है। ऐसी परिस्थिति में आर्य समाज के सिवाय कहीं भी आशा की किरण दिखाई नहीं देती। आज आर्य समाज को युवाओं की जररत है। युवा आगे आयें और बलिदान का रास्ता अपनाकर देश को पतन के गर्त में जाने से बचायें। उन्होंने कहा कि अन्याय, शोषण, गरीबी, बेरोजगारी महिला उत्पीड़न, नशाखोरी, बलात्कार, अपहरण के विरुद्ध युवाओं को प्रेरित करने की आवश्यकता है और यह कार्य स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज आर्य समाज एक मजबूत लोक शक्ति खड़ी करने की दिशा में कदम बढ़ा चुका है और मुझे आशा है कि पूरा राष्ट्र आर्य समाज के साथ जुड़ेगा।

१० अप्रैल को प्रातः विशाल शोभा यात्रा निकाली ग जो हरिद्वार के मुख्य मार्गों तथा बाजारों से होती हुई शिविर स्थल पर समाप्त हुई। इस एक किलोमीटर लम्बी शोभा यात्रा में हजारों व्यक्तियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सभासद व प्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सारे रास्ते में अत्यन्त जोश के साथ नारे लगाये जा रहे थे तथा सारा वातावरण ऋषिमय हो चला था। शोभायात्रा पांच किलोमीटर का रास्ता तय करके जयघोष करते हुए शिविर स्थल पर पहुंची जहाँ खुला अधिवेशन आयोजित किया गया था। १० तारीख को शाम पांच बजे विधिवत अधिवेशन उत्साह पूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

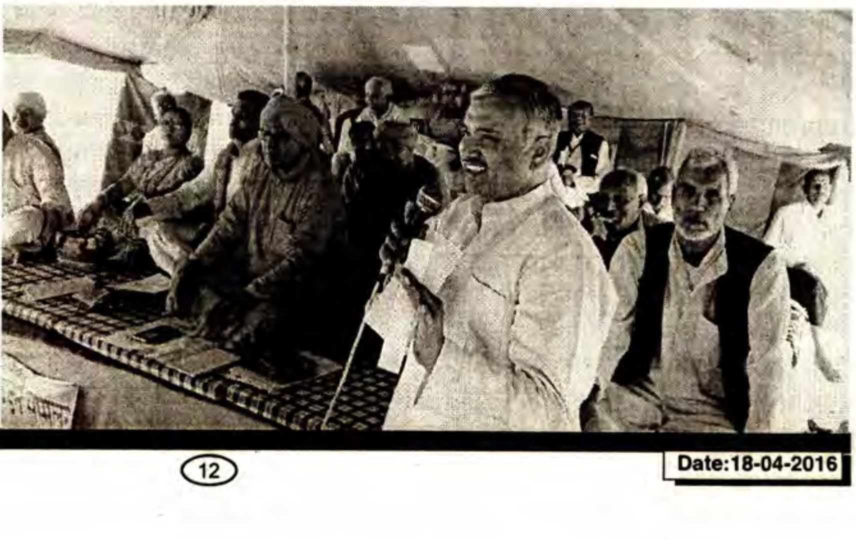

हैदराबाद में ओवेसी नेफिर भड़काया देशद्रोह का दावानल ओवैसी अपने बचाव ंआर्य समाज को ढाल बना रहा है और यही ढाल सका खात्मा करेगी

-सत्यव्रत सामवेदी

हैदराबाद का निजाम धर्मान्ध मुसलमान था और गैर मुस्लिमों पर उसने कहर बरपा रखा था। निजाम ने आर्य समाज के अनुयायियों पर अकथनीय अत्याचार किये और आर्य समाज को विवश होकर जिनाम के विरुद्ध मोर्चा खोलना पड़ा और उस पर युद्ध की घोषणा कर दी तत्कालीन वायसराय ने आर्य समाज के नेताओं को कहा कि विश्व की सबसे शक्तिशाली मुस्लिम ताकत का आप लोग कैसे मुकाबला करेंगे ? आर्य समाज द्वारा युद्ध की घोषणा के बाद सारा संसार आश्चर्यचकित होकर इस युद्ध को देखने लगा। समस्त राजनीतिक दलों ने इस युद्ध में सहयोग देने से इनकार कर दिया और कांग्रेस ने भी निजाम के विरुद्ध चल रहे संघर्ष को स्थगित करने की गोषणा कर दी। अन्ततोगत्वा निजाम को घुटने टेकने पड़े और इस आंदोलन में आर्य समाज का जो धन लगा था उसे भी निजाम को लौटाना पड़ा और निजाम के अत्याचार हमेशा के लिए खत्म हो गए।

आजादी के समय निजाम का देशद्रोह फिर फूट पड़ा और उसने भारत में शामिल होने से इनकार कर दिया और आजाद हैदराबाद की घोषणा कर दी। तब कासिम रिजवी हर रोज हैदराबाद में स्थित निजाम के रेडियो डेकन से भारत विरोधी भाषण प्रसारित किया करते थे। वे यह धमकी दिया करते थे कि हैदराबाद की मुस्लिम सेनाएं सारे भारत पर कब्जा करके उसे मुस्लिम साम्राज्य में बदल देगी और जिसके खलीफा और सुल्तान मीर उस्मान अली खां होंगे। निजाम ने पाकिस्तान की मदद से विदेशों से हथियार खरीदने के लिए ६५ लाख पौंड की विपुल राशि लंदन के एक बैंक के माध्यम से लंदन स्थित पाकिस्तान के राजदूत को भिजवाई थी।

विवश होकर सरदार पटेल को निजाम के खिलाफ पुलिस एक्शन लेना पड़ा। दो दिन के भीतर ही निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और उसकी सेना ने हथियार डाल दिये।

भारतीय सेना ने इत्तेहादुल मुस्लिमीन नामक संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया और कासीम रिजवी को गिरफ्तार कर लिया। कासीम रिजवी को उम्र कैद की सजा दी गई। मगर १९५७ में उसे भारत सरकार ने इस शर्त पर रिहा किया कि वह २४ घंटे के अंदर भारत छोड़कर चला जाएगा। इस संगठन के तार शुरू से ही पाकिस्तान से चुड़े हुए थे। इसलिए कासिम रिजवी के पाकिस्तान जाने पर उसका न सिर्फ भव्यागत किया गया बल्कि उसे एक मोटी रकम न के रूप में पाकिस्तान सरकार ने देना शुरू या। कासिम रिजवी ने पाकिस्तान जाने से पूइब्देहादुल मुस्लिमीन की बागडोर हैदराबाद में 5 वकील अब्दुल वहाब ओवैसी को सौंप दी। यह असुद्दीन ओवैसी उसी अब्दुल वहाब ओवै का वंशज है जो देश में साम्प्रदायिकता बढ़कानेक लिए खुलेआम देशद्रोह कर रहा है और नरेन्द्र दी के प्रधानमंत्रित्व काल में भी निर्भिकतापूर्वकभारत के खिलाफ जहर अगल रहा है।

ओवैसी ने घोषणाकी है-

गर्दन पर छुरी रखो तो भी
भारत माता की ज नहीं कहूंगा।

आरएसएस प्रमुखमोहन भागवत के बयान के विरोध में ओवैसीने यह बात कही है। भागवत ने पिछले दिं सुझाव दिया कि नई दिल्ली को भारत माताकी जय बोलना सिखाना होगा। महाराष्ट्र के लात जिले के उदगीर में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए ओवैसी ने कहा कि मैं यह जयकारा नहींलगाता। भागवत साहब, आप क्या करने जा रहेहैं आयदि मेरी गर्दन पर छुरी रख दें तो भी मैं ाह नारा नहीं लगाऊंगा। ओवैसी ने सभा में मौजूद लोगों से कहा कि मैं भारत में रहूँगा और भरत माता की जय नहीं बोलूँगा क्योंकि यह हमरे संविधान में कहीं नहीं लिखा है कि भारत मात की जय बोलना जरूरी है। दूसरी तरफ संघ प्रमुख मोहन भागवत बोले कि देश की नई पीढ़ी को भारत माता की जय कहना सीखना होगा।

ओवैसी अब कुतर्क दे रहा है और कह रहा है कि "यहां बहुत से आर्य समाजी लोग भी हैं वे ईश्वर की किसी मूरत को नहीं मानते। जो ईश्वर की कोई मूर्ति को स्वीकार नहीं करते वे राष्ट्र की कोई मूर्ति को कैसे स्वीकार कर लेंगे। वे कैसे भारत माता को मानकर पूजेंगे।"

ओवैसी इतना मूर्ख व्यक्ति है कि उसे यह भी पता नहीं कि भारत माता की जय का नारा आर्य समाज ने ही दिया था। आर्य समाज की स्थापना से लेकर आज तक आर्य समाजी लोग संध्या हवन के बाद प्रातः आर्य 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हैं।

आर्य समाज तो सारी भूमि को माता मानता है। वेद का संदेश है- माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्याः। आर्य समाज के क्रांतिकारी भारत को माता मानकर ही हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ते रहे हैं। बिस्मिल के निम्नलिखित गीत ने भारत माता के लिए अपनी आहुति देने की प्रेरणा दी।

दिल फिदा करते हैं, कुर्बान जिगर करते हैं
पास जो कुछ है, वह माता की नजर करते हैं

फांसी से पहले जेल में बिस्मिल की माँ मिलने आई तो बिस्मिल की आँखो से आँसू बहने लगे। वीर माँ ने गरज कर कहा कि यदि तुझे फाँसी से इतना ही डर लगता था तो क्रांति के रास्ते पर क्यूं चला। बिस्मिल ने विम्रतापूर्वक कहा कि माँ ! मैं फासी से नहीं डरा। मुझे इस बात का दुःख है कि मैं तेरी सेवा किए बिना इस दुनिया से जा रहा रहा हूँ। माँ ने हँसते हुए उत्तर दिया कि अनेक बेटे केवल अपनी माँ की ही सेवा करते हैं पर तूने तो भारत माता की सेवा करके करोड़ों माताओं की सेवा की है और रोता हुआ बिस्मिल मुस्करा उठा।

जर्मनी को छोड़कर विश्व के समस्त राष्ट्रों के नागरिक अपने राष्ट्र को माँ मानते हैं। आर्य समाज और वेद के अनुयायियों के लिए माँ या माता सबसे प्रिय शब्द है। वह तो गउ को माता मानता है। संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ है उसकी वह माता के रूप में पूजा करता है। वेद का संदेश है -

इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयो भुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः॥

मंत्र में तीन देवियों की गुणावलियों का वर्णन करते हुए परामर्श दिया गया है कि इळा (प्रशसंनीय मातृ संस्कृति) सरस्वती (मातृ भाषा) मही (पूजा योग्य मातृभूमि) हिंसा रहित, सुख समृद्धि देने वाली, दिव्य गुणों वाली तीनों देवियां घर-घर को प्रकाशित करें।

हैदराबाद से निर्वाचित आल इण्डिय इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी की आदत नित नया विवाद खड़ा करने की है।

अब बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां शुभानल्लाह। ओवैसी की पार्टी के महाराष्ट्र विधानसभाके विधायक वारिस पठान भला अपने आका से पीछे कैसे रहते। उन्होंने जब महाराष्ट्र विधानसभा में भारत माता की जय का नारा लगाने से साफ इनकार कर दिया तो विधानसभा अध्यक्ष को मजबूर होना पड़ा। अब असदुद्दीन ओवैसी यह कुतर्क दे रहे हैं कि भारतीय संविधान में कहां यह लिखा है कि भारत माता की जय का

नारा लगाना जरूरी है । ओवैसी साहब ! क्या इस बात पर प्रकाश डालने का कष्ट करेंगे कि क्या अब तक वो भारतीय संविधान का अक्षरशः पालन करते आ रहे हैं ? क्या इस संविधान के अनरुसार हैदराबाद भारत का अभिन्न अंग है? इसके बावजूद वे आज तक इसे देश का अंग मानने के लिए तैयार नहीं हैं । उनका यह दावा है कि भारत ने हैदराबाद पर जबरन कब्जा किया था । १६ सितम्बर के दिन जब हैदराबाद रियासत का भारत में विलय हुआ था तो उस दिन को आज भी ओवैसी और उनकी पार्टी काले दिवस के रूप में मनाती है। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में हैदराद के भारत में विलय पर शोक प्रकट किया जाता है और इसे योमे मातम के रूप में मनाते हुए घरों और बाजारों में काले झंडे लगाए जाते हैं । क्या यह देशभक्ति है ? क्यायह देश और संविधान के प्रति खुला द्रोह नहीं है ? शर्म की बात है कि योमेस्कूत (जबरन कब्जा) और योमे मातम मनाने का यह सिलसिला लगभगएक दशक सेचल रहा है । मगर आज तक न तो राज्य सरकार ने और न ही केन्द्र सरकार ने इन देशद्रोही तत्वों के खिलाफ कोई भी कदम उठाने की हिम्मत की है ? इससे भी गंभीर बात यह है कि इस अवसर पर आंध्र और तेलंगाना एवं महाराष्ट्र से प्रकाशित होने वाले कई उर्दू समाचार पत्र भी इस योमेस्कूत पर खुलेआम देशद्रोहपूर्ण लेख प्रकाशित करते हैं। मगर गृह देशद्रोह का प्रचार करने वाले इन समाचार पत्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की ।

पुरानी हैदराबाद रियासत के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में साम्प्रदायिकता की ज्वाला भड़का कर औवैसी बंधुओं ने अपने कदम जगाए । इसके बाद उन्होंने अपनी नफरत भरी राजनीति का विस्तार महाराष्ट्र, कर्नाटक में करने का प्रया किया । प्रारंभ में तो उन्हें कुछ सफलता मिली। महाराष्ट्र विधानसभा में उनकी पार्टी के दो विधायक निर्वाचित हुए जबकि बेंगलुरु महानिगम और निजामाबाद नगरपालिका में भी उन्हें कुछ विजय मिली । बिहार विधानसभा चुनाव में उन्होंने सभी सीओं पर अपनी पार्टी के उम्मीदवार खड़े करने की घोषणा की थी मगर हवा के रुख को देखते हुए उन्होंने सीमांचल क्षेत्रों में अपने १६ उम्मीदवार खड़े किए थे । खास बात यह है कि बिहार की मुस्लिम जनता ओवैसी के जहरीले प्रचार के चक्कर में नहीं आई और उसके सभी उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई । अब साम्प्रदायिक ज्वाला भड़का कर ओवैसी साहब उत्तरप्रदेश के चुनाव में अपना भाग्य आजमाना चाहते हैं। इसलिए वो नित नए देशद्रोहपूर्ण बयान देने में चुटे हुए हैं ।

इससे पूर्व असदुद्दीन ओवैसी के छोटे भाई अकबरूद्दीन ओवैसी ने खुलेआम यह धमकी दी थी कि यदि पुलिस और फौज को १५ मिनट के लिए हटा दिया जाए तो मुसलमान हिन्दुओं का सफाया कर देंगे । इसके अतिरिक्त उसने भगवान श्रीराम और उनकी माता बारे में जो टिप्पणी की थी उसे लिखने की मेहम्मत नहीं है । जब उनके इन भाषणों के बारे देश में हंगामा मचा तो राज्य सरकार को विवद्दोकर उनके खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा दर्ज वा पड़ा । यह मुकदमा आज भी कई वर्षों से विाधीन चल रहा है ।

अधिकांश लोग असद्ध ओवैसी और उसकी पार्टी की पृष्ठभूमि के बा नहीं जानते इसलिए इस संदर्भ में उस पर भी ३ प्रकाश डालना बेहद जरूरी है । देशद्रोह ओवैसरिवार के खून में रसा बसा हुआ है । उनके द और पिता दोनों ही साम्प्रदायिकता भड़काने आरोप में भी एक दर्जन से अधिक मुकदमे ग्रालत में चल चुके हैं ।

जहां तक इत्तेहादुल स्लिमीन नामक संस्था का संबंध है जिस पर वैसी परिवार ने क़ई दशकों से कब्जा कर रखहै उसका इतिहास भी कम खतरनाक नहीं है । वें निजाम मीर उस्मान अली खां के इशारे पर नब मोहम्मद नवाज खान ने इस संस्था की नींव १९७ में रखी थी । इसका लक्ष्य हैदराबाद में ब्रिटिश्ताज के साये में एक आजाद मुस्लिम रियासत व स्थापना था । १९३८ में इस संस्था की बागड़ोरोहम्मद अली जिन्ना के सहयोगी नवाब बहादुर जंगअखिल भारतीय मुस्लिम लीग की राष्ट्रीय कार्यकागी के सदस्य और पार्टी के कोषाध्यक्ष भी थे ।इन्होंने पाकिस्तान की स्थापना का डटकर समर्थ किया था । १९३९ में बहादुर यार जंग की दात्त पर जिन्ना हैदराबाद आए थे और उन्होंने निजम से मुलाकात भी की थी । बताया जाता है कि जिन्ना ने निजाम से अनुरोध किया था कि वे अपनी रियासत को पाकिस्तान में शामिल करने की घोषणा करें मगर निजाम ने इसे स्वीकार नों किया क्योंकि निजाम एक आजाद मुस्लिम हैदरबाद के सम्राट बनने का स्वप्न संजोए हुे थे ।

इसी दौरान बीड के हने वाले एक मुसलमान वकील कासिम रिजवी ने नवाज बहादुर यार जंग के माध्यम से निजाम मीर उस्मान अली खां से सम्पर्क साधा निजाम ने सैयद कासिम रिजवी के लिए अपने खजाने के दरवाजे खोल दिए । उन्होंने डेढ़ लाख रजाकार भर्ती किए जिनका लक्ष्य निजाम हैदराबाद की आजाद मुस्लिम रियासत को रक्षा करना था । इन रजाकारों ने हैदराबाद रियासत और आसपास के क्षेत्रों के हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार किए, जमकर लूटपाट व हत्याएं कीं और उनकी औरतों के साथ सामूहिक बलात्कार किया । कासिम रिजवी ने पाकिस्तान जाने से पूर्व इतेहादुल मुस्लिमीन की बागडोर अब्दुल वहाब ओवैसी को सौंपी तो ओवैसी ने पण्डित नेहरू से सम्पर्क स्थापित किया और भारत सरकार ने इत्तेहादुल मुस्लिमीन से प्रतिबंध हटालिया । इसके बाद यह पार्टी हैदराबाद की राजनीति में सक्रिय हो गई । वर्ष २००० में इत्तेहादुल मुस्लिमीन के नेताओं ने तस्लीमा नसरीन और सलमान रुश्दी के खिलाफ जारी उस फतवे का खुलकर समर्थन किया था जिसमें इन दोनों के हत्यारों को इनाम देने की घोषणा की गई थी । २००७ में जब तस्लीमा नसरीन अपनी पुस्तक के तेलगू अनुवाद का लोकार्पण करने के लिए हैदराबाद आई तो उन पर जानलेवा हमला किया गया । जिस पर पुलिस ने तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया । उन पर अदालत में मुकदमा चल रहा है । इत्तेहादुल मुस्लिमीन का कांग्रेस के साथ चुनावी गठबंधन था । २०११ में असदुद्दीन ओवैसी का आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री किरण रेड्डी के साथ हैदराबाद में एक भूखंड के अलाटमेंट को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ।

इसके बाद मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिमीन ने कांग्रेस के साथ अपना गठबंधन तोड़ दिया। हालांकि बहाना यह बनाया गया कि राज्य सरकार क्योंकि अवैध रूप से बनाए गए भाग्यलक्ष्मी के मंदिर को गिरवाने के लिए तैयार नहीं है इसलिए वह किरण रेड़ी सरकार का समर्थन नहीं करेंगे ।

ओवैसी के देशद्रोही बयान पर केन्द्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने कहा कि यदि कोई भारत माता की जय बोलने से इनकार करता है तो इससे घटिया मानसिकता हो ही नहीं सकती । भारत माता की जय बोलना हमारे जन्मघूटी की तरह है । भला कोई अपनी मां का जयकारा लगाने से मना कैसे कर सकता है । ओवैसी जैसे लोग सार्वजनिक रूप से भारत माता की जय बोलने से इनकार करे तो इससे बड़ा देशद्रोह कोई हो ही नहीं सकता । ऐसी व्यक्ति की न केवल लोकसभा सदस्यता रद्द की जानी चाहिए बल्कि उस पर देशद्रोह का मुकदमा भी चलाया जाना चाहिए । ऐसी घटिया बातें कहने वाले इस देश में रहते ही क्यों हैं ? संविधान में न भी लिखा हो तो क्या भारत माता, जिसकी गोदी में हम रहते हैं, खाते हैं और सोते हैं उसका अहसानमंद नहीं होना चाहिए ?

हमें जावेद पर गर्व है जिसने यह कहा कि भारत माता की जय बोलना मेरा कर्त्तव्य नहीं बल्कि यह मेरा अधिकार है । मैं कहता हूँ - भारत माता की जय, भारत माता की जय।

आर्य समाज शिवसेना नेता रामदास कदम के इस बयान का समर्थन करता है कि वे पाकिस्तान चले जाएं, उन्हें भारत में रहने का अधिकार नहीं है । आर्य समाज की मांग है कि ओवैसी और उसकी पार्टी इत्तेहादुल मुस्लिमीन को साम्प्रदायिक पार्टी घोषित किया जाए और उस पर प्रतिबंध लगाया जाए । ओवैसी जिन्ना का नया संस्करण है और जिन्ना की तरह ही देश के टुकड़े करने का षड़यन्त्र कर रहा है। अगर समय रहते इस आग को नहीं बुझाया गया और ओवैसी और उसके अनुयायियों को देशद्रोही घोषित नहीं किया गया तो भारतवर्ष साम्प्रदयिकता की आग में जलकर नष्ट हो जाएगा और लम्हों की से सदिया सजा पाएंगी।

श्रीराम नवमी पं. नरेन्द्रजी के जन्म दिवस के उपलक्ष में

जनम-कुल-कुलवार्ता

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

हैदराबाद स्टेट भारत के मध्य दक्षिण में स्थित एक सम्पन्न राज्य था परंतु प्रजा के अधिकांश लोग अत्यन्त पिछड़े व निर्धन थे। राज्य में बड़े-बड़े मकबरे, मस्जिदें, महल, कारागारें व सरकारी भवन एवं नवाबों-जागीरदारों की भव्य कोठियां राज्य के वैभव की पहचान बताये जाते थे। परंतु, यह स्टेट इतनी पिछड़ी थी कि कस्बों को तो छोड़िये बड़े-बड़े नगरों में भी कॉलेज नहीं थे। कस्बों में हाई स्कूल तक नहीं थे। इस राज्य की पीड़ित, शोषित व पदाक्रांत प्रजा की मुक्ति के लिए अपना सर्वस्व वार देने वाले महान सेनानियों में क्रांतिवीर पं० नरेन्द्र जी का स्थान बहुत ऊँचा है। उन्हें हम श्रद्धा से भाव भरित हृदय से दक्षिण का गेरीबाल्डी कहा करते हैं।

जो कुछ गेरीबाल्डी ने इटली की स्वतंत्रता व एकीकरण के लिए किया वही कुछ हैदराबाद के अन्यायी, क्रूर सामन्ती राजवंश का राज्य उखाड़ने के लिए इस अतुल्य पराक्रमी ने किया। वह कौन सा दुःख-कष्ट है। जो इस देश भक्त ने प्रजाहित में न झेला हो ?

इस प्राणवीर का जन्म आर्य जाति के ऐतिहासिक पर्व राम नवमी के दिन १० अप्रैल १९०७ को हैदराबाद नगर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम राय केशवप्रसाद व माता का नाम श्रीमती गुणवतीजी था। यह परिवार मूलतः उत्तर प्रदेश से दक्षिण में गया था। ये लोग कायस्थ थे। **आर्य समाज में प्रविष्ट होने से पूर्व और अच्छा तो यह लगेगा यदि हम यह कहें कि नरेन्द्र में आर्य समाज प्रविष्ट होने से पहले वह नरेन्द्र सक्सेना कहलाते थे।**

कायस्थों की कुछ अपनी विशेषतायें रही हैं गुण भी और दोष भी। कायस्थ बहुत विद्या प्रेमी, लेखनी के धनी व मांस मदिरा से दूर रहे हैं। एक समय था जब इनमें उच्च शिक्षा भी कम थी। मुसलानी काल से ही कायस्थ राजभक्ति के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। पं० नरेन्द्र जी का परिवार भी इसका अपवाद नही था। उनके परिवार के बारे कुछ लिखने से पहले यह बताना बहुत रुचिकर होगा कि पूज्य पण्डित जी ने अपनी आत्मकथा में अपने कुल के विषय में केवल आधा पृष्ठ ही लिखा है। इसका कारण ?

हमारी समझ में 'विरक्ति' ही इसका उत्तर हो सकता है। यह आत्मकथा संन्यास लेने से कुछ ही मास पहले लिखी गई परंतु पण्डित जी में विरिक्त ा भाव तो १-९-३० में ही उत्पन्न हो गया जब आपने घर गृहस्थी न बसाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। काषाय वस्त्रों के बिना ही वे एक विरक्त कर्मवीर संन्यासी थे। अपनी आत्मकथा का आरम्भ करते हुए आप लिखते हैं।

''उत्तर भारत से निकलकर निज़ामशाही के प्रति वफादारी स्वीकार करते हुए मेरे वंश के पहले बुजुर्ग हैदराबाद पहुँचे। परिवार का हर व्यक्ति सम्पन्न और शिक्षित था।

मेरे दादा राय काहनचन्द्र जी हिन्दी तथा उर्दू फ़ारसी के विद्वान् थे। पिताजी राय केशव प्रसाद भी उर्दू-फारसी के प्रति सुरुचि और विद्वत्ता रखते थे। मेरे मामा राय ठाकुर प्रसाद जी हिन्दी, उर्दू और फारसी के साहित्यकार थे। उन्हें शायरी से लगाव था और उनका उपनाम 'नज़्म' था।''

पण्डित जी के दो भाई व पाँच बहनें थीं। छोटे भाई योगेन्द्र प्रसाद का तो दस वर्ष की अलपायु में ही निधन हो गये। बड़े भ्राता राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के समय आप कारागार में थे। आपकी बहनों के नाम थे चतुरदेवी जी, कृष्णादेवी जी, विष्णु देवी जी, वसन्ती देवी जी तथा हर देवी जी।

सन् १९२६ में नरेन्द्र जी ने यंगमेन्स सक्सेना यूनियन की स्थापना करके अपने सार्वजनिक जीवन को आरम्भ किया। अपनी बिरादरी में कुछ सुधार कार्यों के लिए लोगों को प्रबल व सफल प्रेरणा दी। इस सक्सेना यूनियन को वपक रूप देकर आपने थोड़े ही समय में से यंगमेन्स कायस्थ यूनियन नाम दे दिया। इससे आपका कार्य क्षेत्र भी पहले की अपेक्षा विस्तृत हो गया। इस यूनियन के प्रथम सचिव आप ही निर्वाचित हुए।

पण्डित जी के आरम्भिक जीवन की चर्चा को थोड़ा आगे बढ़ाने से पूर्व कायस्थ समाज और पण्डित जी के विषय में दो महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख यहीं पर कर देना उचित रहेगा। सन् १९४३ में लखनऊ के केसरबाग मे अखिल भारतीय कायस्थ महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसके अध्यक्ष हैदराबाद के निर्माण मंत्री राजा धरमकरण माथुर मनोनीत किये गए। अध्यक्ष जी के ही एक हैदराबादी सगे संबंधी ने वहाँ निज़ाम उस्मान को धन्यवाद देने का प्रस्ताव रख दिया। यह तो चाटुकारिता व राजभक्ति की पराकाष्ठा थी। उस सम्मेलन में विभिन्न प्रदेशों के कई प्रतिनिधियों ने तब इस प्रस्ताव का यह कहकर कड़ा विरोध किया कि निज़ाम उस्मान के शासन काल में पं० नरेन्द्र जी व समस्त हिन्दुओं पर कैसे-कैसे अमानीय अत्याचार किये जा रहे हैं।'

इस घटना से कायस्थ समाज के राजभक्ति के संस्कारों के साथ इस समाज में अंगड़ाई लेती हुई जागृति व नवचेतना का भी परिचय मिलता है।

पण्डित जी के हृदय परिवर्तन की स्वलिखित व स्वकथित (जो इन पंक्तियों के लेखक को कहा) कहानी तो आगे देंगे। कायस्थ समाज व पण्डित जी के जीवन पर प्रकाश डालने वाली दूसरी घटना हमने आचार्य कृष्ण (स्वामी दीक्षानन्द) जी से सुनी फिर पण्डित जी से उसकी पुष्टि करवाई। एक अमेरिकी सोधकर्त्ता हैदराबाद में पण्डित जी का साक्षातर लेने आया। उसके शोध का विषय कायस्थ बिरदारी थी। न जाने उसने कहाँ से पता लगा लिया कि पण्डित नरेन्द्र जी का जन्म एक कायस्थ कुल में हुआ है। हमारा विचार है कि उसे यह जानकारी किसी जन्माभिमानी कायस्थ ने ही दी होगी।

उस अमरीकन बंधु ने पण्डित जी से

पहला मार्मिक प्रश्न जो किया वह यह था कि कायस्थ तो परम्परा से बड़े राजभक्त रहे हैं और आप भी एक राजभक्त कुल में जन्में फिर आप आर्य समाज सरीखी विद्रोही व क्रांतिकारी संस्था से कैसे जुड़ गये । आप आर्य समाजी बनते ही इतने उग्र क्रांतिकारी बन गये ।

पण्डित जी ने आर्य समाज की गरिमा व अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप उसे जो उत्तर देना था सो दिया परंतु इस घटना से यह तो स्पष्ट ही है कि उनकी उग्रता, निडरता, स्पष्टवादिता व स्वातन्त्रय प्रेम विदेशी शोधार्थियों के लिए भी एक चकित कर देने वाली समस्या रहा है। यहाँ यह भी लिखना आवश्यक है कि पण्डित जी ने तब जाति पाँति से अलिप्त रहकर उसे सब प्रश्नों के उत्तर दिये । किसी र प्रतिष्ठित आर्य नेता के बारे यह नहीं बताया कि मेरा ही क्या वह भी कायस्थ था और वह भी कायस्थ है । साथ बैठे आचार्य कृष्ण बस चुप रहकर इनकी वार्ता सुनते रहे । आपने यह नहीं कहा कि मेरा भी साक्षात्कार ले लें **मैं भी तो कायस्थ कुल में जन्मा आर्य समाजी हूँ ।**

तरुणाई आते-आते

नरेन्द्र जी की आरम्भिक शिक्षा कायस्थ पाठशाला तत्पश्चात् धर्मवन्त हाई स्कूल में हुई। बहुत ऊंची शिक्षा प्राप्त करने का या कॉलेज में जाने का तो अवसर न मिला । विद्यार्थी जीवन में आप एक मेधावी छात्र थे। खेलकूद में आगे शरारतों मे आगे और घूमने-फिरने में अपने साथियों में सबसे आगे ही रहते थे । आपा स्वभाव बाल्यकाल से ही कोमल, प्रेमल व मृदुल रहा है । आप आरम्भ से ही कर्त्तव्यनिषठ रहे हैं । भक्ति भाव, सेवा भाव व धर्मभाव में बहुत दृढ़ व कठोर रहे हैं।

अपने सगे संबंधियों में से आप अपने मामा राय ठाकुर प्रसाद जी ''नज़्म' से अधिक प्रभावित हुए । 'नज़्म' जी बड़े सुधारवादी और वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले साहित्यकार थे । आपने कुमार अवस्था में 'जगदीश सभा' नाम की एक संस्था की स्थापना करके एक पुस्तकालय चलाया । उस युग में ह एक क्रांतिकारी, साहसिक व महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य था । इस सभा के वार्षिकोत्सव भी धूमधाम से होते रहे । आपने 'कायस्थ यूनिन' द्वारा भी एक पुस्तकालय की स्थापना की थी । पुस्तकालय आंदोलन तब राज्य के अन्य-अन्य भागों में भी चल रहा था ।

नरेन्द्र जी ने जीवन की राह टटोलते हुए अपने सामर्थ्यानुसार इस आंदोलन को योगदान दिया । इससे भी जन जागरण में सहयोग मिला । सृजन की शक्ति तो नरेन्द्र में बाल्यकाल से ही थी । लगता है कि उनके पूर्वजन्म के सेवा व समर्पण के संस्कार बड़े प्रबल थे । उन पर राख पड़ चुकी थी । आर्य समाज रूप अग्नि के सम्पर्क में आने से वह राख हट गई और उनके भीतर की ज्वाला **धधक उठी ।** आपकी तरुणाई ने देश को तार दिया ।

बाल्यकाल का एक चमत्कार

हैदराबाद के साहित्य प्रेमी श्री दिगम्बर राव जी बिन्दु ने पं० नरेन्द्र जी के बाल्यकाल एक संस्मरण लिखा है । हम उन्हीं के शब्दों में इसे यहाँ देते हैं ।

''सन् १९१९ या १९२० की बात है, जबकि मैं नया-नया ही हैदराबाद आया था और ुछ कवि, लेखक और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आ रहा था । एक दिन कुछ मित्रों के साथ शाहअलीबंडा के हरी बावली विभाग में, श्री रघुनाथ राव ''दर्द' (श्री शेषराव पीलखाने) से मिलने गया था । तब वे मुझे एक अन्य सज्जन के पास ले गये, ताकि उनसे भी मेरी भेंट हो जो । परस्पर परिचय तथा चाय पान आदि के पश्चात् वे सज्जन बोले, ''और थोड़ी देर रुकिये, मैं एक चमत्कार बताना चाहता हूँ ।''

उन्होंने एक छोटे बच्चे को बुला लिया, जिसकी आयु ८-९ वर्ष की ही होगी । बच्चे को दुलारते हुए उन्होंने उससे कहा, ''बेटे आज इतने बड़े-बड़े लोग आये हैं, तो इन्हें अपना भाषण सुना दो ना ।''

और हमारी ओर देखते हुए बोले, ''आप भाषण के लिए किसी भी विषय का सुझाव दे सकते हैं ।'' हममें से किसी ने कहा ''ब्रह्मचर्य विषय पर भाषण हो जाय ।''[1]

बच्चे ने तुरंत ही भाषण आरंभ कर दिया। हमको आश्चर्य हुआ कि लगभग दस मिनट तक उस बच्चे ने अपनी सरल, सीधी-सादी परंतु प्रवाही भाषा में ब्रह्मचर्य संबंधी अपने विचारों को प्रकट किया ।

यही बालक आगे चलकर हैदराबाद राज्य के दो तीन मूर्धन्यय ओजस्वी वक्ताओं में से एक जाना जाने लगा । सारा देश इसकी वक्तृत्व कला पर मुग्ध था । यही बालक नरेन्द्र के रूप में अपने शौर्य, त्याग व सेवा से राज्य के युवकों का हृदय सम्राट् बन गया ।

१. 'जीवन की धूप-छाँव' पृ. ९, २. देखिये हैदराबाद के लौह पुरुष पं० नरेन्द्र पृ. ५८ , देखिये ''हैदराबाद के लौह पुरुष पण्डित नरेन्द्र'' पृ. १३

स्वर्गीय श्रीमती तुलजादेवी जी को
आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

श्रद्धांजली

सभा के उपप्रधान लक्ष्मण सिंह जी की धर्म पत्नी श्रीमती तुलजादेवी का निधन २२ मार्च २०१६ को हुआ । उनकी आयु ७५ वर्ष की थी । उनका भरा-पुरा परिवार है । स्वर्गीय श्रीमती तुलजादेवी जी प्रतिदिन सायंकाल सपरिवार संध्या-भजन करती थी । सभी बच्चे बच्चियों को स्वाभिान और स्वावलंबी बनने की प्रेरणा देती थी। वो कहती थी - बलमें बल अपना बल पराया बल चुल्हे में जा। बिरादरी में उनके अतिथी सत्कार का विषय बहुत ही चर्चित रहा है । आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे ।

ఎందుకు కడుపుమంట ?

ఆ మాటలు ఏ హిందూ మత నాయకుడి నోటో వెలువడి ఉంటే నిరాధార నిందలను ప్రచారం చేస్తున్నారని తటస్థులు శంకించవచ్చు. కాని - కోహత్‌లో బలవంతపు మత మార్పిడి తీరుతెన్నుల గురించి తాను విన్నదేమిటో చెప్పినవాడు మహమ్మదీయుల పట్ల ప్రత్యేకాభిమానంగల గాంధీ.

- ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

తమ రక్షణ కావాలంటే హిందువులు తమ తమ మత చిహ్నాలను తొలగించుకోవాలని మహమ్మదీయులు పట్టుబట్టారనీ... అందుకే తమ సిగలను కోసి, జంధ్యాలను తెంపి తమను ఇస్లాంలో చేర్చుకోవలసిందని హిందువులే బతిమిలాడినట్లు ముస్లింలు తనకు చెప్పారనీ... సాధారణంగా ముస్లింల మీద ఈగ వాలనివ్వని మహాత్ముడే - విచారణ నివేదికలో వెల్లడించాడంటే - కోహత్‌లో చెలరేగిన మతదాష్టీకం ఎంత భయానకమైనదో మనం ఊహించవచ్చు. మహోన్నత వ్యక్తిగా తాను లెక్కలేనన్నిసార్లు పొగడిన షౌకత్ ఆలీతో కలిసి జాయింటు విచారణకు వెళ్లిన గాంధీజీ తీరా అక్కడ పరిస్థితి చూశాక, ప్రాణభయంతో రావల్పిండికి తరలి తలదాచుకున్న హిందువుల క్షోభను కళ్లారా గమనించాక షౌకత్ ఆలీతో మౌలికంగా విభేధించి విడిగా నివేదిక ఇచ్చాడు. దీన్నిబట్టే హిందువులను కాల్చుకు తిన్న ముస్లిం మతోన్మాద తీవ్రత అవగతమవుతోంది. ముస్లింలది మెజారిటీ అయిన వాయువ్య సరిహద్దు రాష్ట్రంలో ప్రాణాలకు రక్షణ కావాలంటే నిర్బంధంగా మతం మారక తప్పని పరిస్థితిని హిందువులు ఎదుర్కొన్నారంటే - మతాంతరీకరణల వెల్లువ మూలంగా ఇక మొత్తం దేశంలో తాము మైనారిటీ అయిపోతే తమ ముందుగతి ఏమిటన్న భయం హిందూ సమాజాన్ని తీవ్రంగా అవహించింది.

కాకినాడ కాంగ్రెస్ సభల పందిట్లో సైడ్‌షోగా 1923 డిసెంబరు ఆఖరున జరిగిన జమాయత్ ఉల్ ఉలేమా మహాసభలో 'శుద్ధి' ఉద్యమ నాయకులను 'ఇండియాకు నీచ నికృష్ట శత్రువులుగా, 'సంఘటన'ను భారత ప్రగతికి ప్రమాదకారిగా అధ్యక్ష మహోదయుడు అభివర్ణించాడు. "హిందూ ముస్లిం ఐక్యత పునాదినే దెబ్బతీసే ఆ రకమైన విచ్చిన్న కార్యకలాపాలకు పాల్పడుతున్న జాతి వ్యతిరేకులు" అని మహాసభ హిందూ ఉద్యమకారులను అభిశంసించింది. ముస్లిం

వర్గాల్లో అసహనం పెరిగేకొద్దీ హిందూవర్గాల్లో శుద్ధి, సంఘటనల పట్ల అభిమానం పెరిగింది. తాము రివర్సు మత మార్పిడులను ఉద్యమంగా సాగిస్తేగానీ అన్య మతస్థుల దౌర్జన్యాలను ఎదుర్కొని మతపరమైన ఉనికిని నిలబెట్టుకోలేమన్న తెగువ హెచ్చింది. కోహత్ ఘోరకలి తరువాత మూణ్నెల్లకు 1924 డిసెంబరు 27న బెల్గాంలో జరిగిన హిందూ మహాసభ ప్రత్యేక సమావేశం అధ్యక్షోపన్యాసంలో **మదనమోహన్ మాలవీయ** ఇదే వైఖరికి అక్షర రూపం ఇచ్చాడు - ఇలా :

For centuries Muhammadans have been converting Hindus, and the Majority of the Muslims of India were converts. Numerous Christian Missions were also carrying on a campaign of proselytisation. Therefore the question of having a Hindu mission for proselytisation had become a very pressing necessity in the situation.

[*Struggle for Freedom*, Ed.R.C.Majumdar,p.419]

(అనేక శతాబ్దాలుగా మహమ్మదీయులు హిందువులకు మత మార్పిడి చేస్తూ వచ్చారు. ఇండియాలోని ముస్లింల్లో మెజారిటీ అలా మతం మారినవారే. అసంఖ్యాక క్రైస్తవ మిషన్లూ మత మార్పిడి ఉద్యమాన్ని ముమ్మరంగా సాగిస్తున్నాయి. కాబట్టి ఇతర మతస్థులను తమ మతంలోకి ఆకర్షించటం కోసం హిందువులకూ ఒక మిషన్ ఉండటం ఇప్పుడున్న పరిస్థితుల్లో అతి ముఖ్య అవసరమైంది...)

ముస్లిం మతతత్వానికి దీటుగా హిందూ మతతత్వమూ సంఘటితమై ఢీ అంటే ఢీ అనడానికి ఉరకలేసేసరికి అప్పటి వరకూ ముస్లిం మతోన్మాదాన్ని అల్లారుముద్దుగా పెంచి పోషించిన కాంగ్రెసు నాయకుల కాళ్లు చల్లబడ్డాయి. ఆ సవాలును ఎదుర్కొనడానికి మోతీలాల్ నెహ్రూ, మౌలానా అబుల్ కలాం ఆజాద్ ప్రభృతులు కొత్త ఎత్తు వేశారు. రాజకీయాలకు అతీతంగా ప్రజలను సంఘటిత పరచడానికి 'ఇండియన్ నేషనల్ యూనియన్' పేర కొత్త సంస్థను పెట్టాలని వారి తలంపు. దానికంటూ ఒక కేంద్ర బోర్డు ఉంటుందట. ఆ బోర్డు వారు 'కమ్యూనల్' అని ముద్ర వేసిన ఏ సంస్థతోనూ సంబంధం పెట్టుకోనని, కొత్త గుడారంలో చేరదలిచిన ప్రతి వారూ ప్రతిజ్ఞ చేయాలట. అలాగని ముసాయిదా నియమావళిని కూడా రూపొందించారు.

కాంగ్రెసు మహా నాయకుల దృష్టిలో ఎవరు కమ్యూనల్, ఎవరు కాదు అన్న విషయంలో అనుమానం లేదు. మతవాదం పొడగిట్టనట్టు పోజు బాగానే పెట్టినా వారికి మింగుడు పడనిదల్లా హిందూ మతవాదమే. అందుకే మతవాదులన్న నెపం వేసి మదన్ మోహన్ మాలవీయ వంటి అకళంక దేశభక్తులను, జగమెరిగిన జాతీయ నాయకులను దూరంగా పెట్టినవారు ఢిల్లీ ఖిలాఫత్ కాన్ఫరెన్సులో పక్కా మతవాదిగా మాట్లాడిన హకీం అజ్మల్‌ఖాన్ బోటివారికి కొత్త సంస్థలోకి తలుపులు బార్లా తెరిచారు.

ఇదేమి ద్వంద్వనీతి అని చాలామంది విసుక్కున్నారు. స్వామి శ్రద్ధానంద అయితే మొగమాటం లేకుండా బాహాటంగానే

కాంగ్రెసు నేతల ముస్లిం పక్షపాతాన్ని దుయ్యబట్టాడు. ఇరు మతవర్గాల మధ్య ఘర్షణకు, ఉద్రిక్తతకు కారణాల మూలాల్లోకి వెళ్లకుండా కొత్త సంస్థను తలపెట్టి ప్రయోజనమేమిటని ఆయన నిష్కర్షగా నిగ్గదీశాడు. కొన్నేళ్ల కిందటి వరకూ కాంగ్రెస్ మహాసభల ప్రాంగణంలో హిందూ మహాసభ సమావేశాలు పెట్టుకోనిచ్చారు గదా ? అస్పృశ్యతకు సంబంధించి కాంగ్రెసు నెత్తికెత్తుకుని బోర్లపడ్డ కార్యక్రమాన్నీ చివరికి హిందూ మహాసభకే వీరికోరి బదలాయించారు కదా ? అప్పుడు హిందూ మహాసభ కమ్యూనల్ సంస్థ అన్న గ్రహింపు కాంగ్రెసు పెద్దలకు లేదా ? ముస్లిం, క్రైస్తవ మతమార్పిళ్లకు జవాబుగా హిందూ ధర్మంలోకి పునరాగమనానికి 'శుద్ధి'ని ఉద్యమంగా చేపట్టిన తరువాతే కాంరగెసు కళ్లకు మేము కమ్యూనలిస్టుల్లా కనిపించామా - అని స్వామీజీ చడామడా దులిపేశాడు. ఆయన ధాటికి తట్టుకోలేక చివరికి కొత్త 'నేషనల్ యూనియన్'ని పెట్టాలన్న ఆలోచననే కాంగ్రెసు పెద్దలు మానుకున్నారు.

కాని స్వామి శ్రద్ధానంద చాలామందికి కంటు అయ్యాడు. ముఖ్యంగా - కాంగ్రెసు భుజాల మీద తుపాకి పెట్టి హిందూ మత చైతన్యాన్ని, హిందూ సంస్థల ఉద్ధతిని మట్టుపెట్టాలని చూసిన ముస్లిం మతవాదులకూ, వారి రాజకీయ గార్డియన్లకూ...!

'శుద్ధి', 'సంఘటన' ఉద్యమాలలో ప్రముఖ పాత్ర వహించిన వారు మరి కొందరు ఉన్నా ఒక్క శ్రద్ధానంద మీదే ఇస్లామిక్ మతవర్గాల ఆగ్రహం కట్టలు తెంచుకోవడానికి ఇంకో ముఖ్య కారణం ఉంది. అస్పృశ్యత దురాచారం మీద యుద్ధం ప్రకటించి, అంటరానివారిని హిందూ సమాజం అక్కున చేర్చాలని శ్రద్ధానంద తహతహలాడింది ఇస్లాం మత వ్యాప్తిని అడ్డుకోవటానికేననీ, ముస్లింలతో లడాయిలో అస్పృశ్యులను హిందువుల పక్షాన అడ్డంగా వాడుకోవడానికేననీ మహమ్మదీయ వర్గాల్లో చాలాకాలంగా అనుమానం ఉంది. అయినా అస్పృశ్యుల విషయంలో హిందూ సమాజానికి మొదటి నుంచీ గూడుకట్టిన ఏహ్యాభావం అలాగే కొనసాగినంత కాలమూ శ్రద్ధానందలాంటి వాళ్లు చేయగలిగింది తక్కువ అన్న ధీమా వారికి ఉండేది.

పైగా హిందువుల్లో మతం కంటే కులం పట్టు ఎక్కువ. ఏ కారణాలవల్ల అయితేనేమి ఒకసారి మతం మారి కులం నుంచి బయటికి వెళ్లిన వారిని వెనక్కి తీసుకోవడానికి కుల కట్టుబాటు ఒప్పుకోదు. ఆచారాలు, ఆహారపు నియమాలు మంటగలిపి మ్లేచ్ఛుల్లో కలిసిన "భ్రష్టుల"ను తిరిగి త పంక్తిన కూచోనివ్వటానికి, వైవాహిక బంధుత్వాలు కలుపుకోవడానికి కులధర్మం ససేమిరా అంగీకరించదు. అందుకే బయటికి వెళ్లిన వారిని ఆర్యసమాజ్ వంటి సంస్థలు 'శుద్ధి' ప్రక్రియ ద్వారా హిందూ ధర్మంలోకి తిరిగి తీసుకురాగలిగినా వారు ఆర్య సమాజం వారుగా వేరేగా బతకాల్సిందే. మతం మారడానికి పూర్వం ఏ కులంలో ఉండేవారో అదే కులంలో తిరిగి కలవడానికి అవకాశం బొత్తిగా ఉండదు. స్వధర్మంలోకి వెళ్లినా తిరిగి చుట్టాలు పక్కాలు తమను ఇంకా అంటరాని పంక్తిబాహ్యులుగానే చూసేటప్పుడు మళ్లీ మతం మారి ఏమి లాభమున్న నిస్పృహ ఎలాగూ ఉంటుంది.

"హిందూ మతంలోకి తిరిగి వచ్చేవారు ఏ కులానికి చెందుతారు?" అని ఒక పత్రికా ప్రతినిధి అడిగితే "బయటికి వెళ్లే ముందు వారిది ఏ కులమో, ఆ కులాన్ని తిరిగి వచ్చాక వారు పొందుతారు" అని స్వామి వివేకానంద ఇచ్చిన జవాబును ఇంతకు పరిస్థితులకు తగినట్టు ఆయన చేసిన ఈ ఉద్బోధను పెడచెవిన పెట్టింది. హిందువుల్లో కులం పట్టు ఎంత కర్కశమో అన్య మతస్థులకు బాగా తెలుసు. కాబట్టే ఆర్య సమాజం వాళ్లో, మరొకరో మతం మారిన వారిని వెనక్కి తీసుకువెళ్లేందుకు ఎన్ని తంటాలు పడ్డా, కులం తలుపులు ఆ బాపతు వారికి మూసి ఉన్నంతకాలమూ తమకు చింత లేదని వారు ధీమాగా ఉన్నారు. ఆ నిశ్చింత కూడా ఎంతోకాలం నిలవకుండా శ్రద్ధానంద స్వామి కులవహౌధ్యపు కంచుకోటను తాత్కాలికంగానైనా పగులగొట్టగలిగాడు.

మల్కానా రాజపుత్రుల విషయంలో.

మల్కానాలు ఉత్తరప్రదేశ్, రాజస్థాన్‌లలో పెద్ద సంఖ్యలో ఉన్నారు. వారూ ఒకప్పుడు హిందువులే. శ్రేష్ఠమైన రాజపుత్ర వంశీకులే. అయితే మొగల్ దండయాత్రల దరిమిలా వారి పూర్వీకులు ఒత్తిళ్లను, వేధింపులను తట్టుకోలేక తప్పనిసరై ఇస్లాంమతం పుచ్చుకున్నారు. మతమార్పిడి జరిగిన మిగతా వారిలా వారు తమ పూర్వాచారాలను, సంప్రదాయాలను వదులుకోలేదు. ఆఖరికి హైందవ మత చిహ్నాలను విడనాడలేదు. హిందువుల్లాగే వారూ శిఖనూ, యజ్ఞోపవీతాన్ని ధరిస్తారు. ఆచార వ్యవహారాల్లో వారికీ హిందువులకూ తేడా ఉండదు. అసలు వారిని చూసినవారెవరూ వారు ముసల్మాన్లంటే నమ్మరు.

ఎవరి దాకానో ఎందుకు ? సాక్షాత్తూ శ్రద్ధానంద స్వామే మల్కానాల విషయంలో తికమకపడ్డాడు.

మల్కానాలు హిందూ ధర్మంలోకి తిరిగి రావాలని చాలాకాలంగా తహతహలాడుతున్న సంగతి స్వామీజీకి తెలుసు. అప్పటికి పద్దెనిమిదేళ్ల కింద కొంతమంది మల్కానాలకు ఆర్య సమాజ్ వారు ప్రాయశ్చిత్తాలు చేసి వైదిక మతంలోకి తిరిగి తెచ్చినా రాజపుత్ర సమాజం వారిని తమలో కలుపుకోవడానికి నిరాకరించిన సంగతి ఆయన ఎరిగిందే. అప్పటి నుంచీ రాజపుత్ర సభ వారికి నచ్చచెప్పి మనసు మార్పించటానికి స్వామి గట్టి ప్రయత్నాలు చేస్తూ వచ్చాడు.

1923 ఫిబ్రవరిలో భారతీయ శుద్ధి సభకు అంతా కలిసి తనకు అధ్యక్షుడుగా ఎన్నుకున్న తరవాత కొత్త కదలికకు మందీ మార్బలాన్ని ఆర్థిక పుష్టిని సమకూర్చడం ఎలాగన్నది మేనేజింగ్ కమిటీలో చర్చించడానికి శ్రద్ధానంద ఆగ్రా వెళ్లాడు. సమావేశం మరి కాసేపట్లో మొదలవుతుందనగా ఆయనను కలవడానికి నలుగురైదుగురు వచ్చారు. వారి వాలకం, వేషధారణ చూస్తే హిందువుల్లా ఉన్నారు. వచ్చీ రాగనే 'రామ్‌రామ్' అని అభివాదం చేశారు. వారు హైందవ రాజపుత్రులే అని స్వామి అనుకున్నాడు.

ఆ నమ్మకంతోటే వారు వచ్చి కూచోగానే నేరుగా విషయంలోకి వెళ్లాడు. మల్కానాలూ మీ సోదరులే కదయ్యా ! వారిని తిరిగి మీలో కలుపుకోవడానికి మీకు అభ్యంతరమేమిటి - అని నిలదీశాడు.

ఆగంతకులు తెల్లబోయి ఒకరి మొగాలు ఒకరు చూసుకున్నారు. స్థానిక కార్యకర్త పరుగున వచ్చి శ్రద్ధానంద చెవిలో చెప్పాడు-

"వాళ్లు ముస్లిం మల్కానాలండీ ! తమకు శుద్ధి కార్యక్రమం ఎప్పుడు చేయిస్తారని అడగటానికి వచ్చారు"- అని.

[*Hindu Sangathan, Saviour of the Dying Race*,
Shraddhananda Sanyasi, p.125]

వైదిక కుటుంబ వ్యవస్థ

ప్రపదోఽవనే నిర్గి దుశ్చరితం యచ్చదార శుద్ధేః శపైరా క్రమతాః ప్రజానన్ తీర్త్వా తమాంసి బహుధా విపశ్య న్నజో నాకమాక్రమతాం తృతీయమ్ ॥ -అధర్వ. 9-5-3

ఓనరుడా ! నీలోగల దుష్టాచరణను తొలగించుకొనుము. దానిని శుభ్రంగా కడిగి తుడిచి వేయుము. తరువాత పరిశుభ్రమైన నిర్మలమైన ఆచరణ ద్వారా జ్ఞానివై ముందుకు నడువుము మరల - అనేక విధాలైన పాపాల్ని, అంధకారాల్ని దాటి, ధ్యానము మరియు యోగసమాధుల ద్వారా అజన్ముడైన (జన్మరహితుడైన) బ్రహ్మ సాక్షాత్కారాన్ని అనుభవించుతూ శోక, మోహాదులకు దూరుడవై పరమానంద మయమైన మోక్ష పదవిని అధిరోహించుము నీ ఆచరణను అందంగా మలచుకొనుము. జీవించి యుండగా ఆనందాన్ని అనుభవించుము. మరణానంతరం నీయశశ్చంద్రికలు - కీర్తి కాంతులు నలువైపుల వ్యాపించుగాక అన్నది వేదం.

స్త్రీ, పురుషులు ఏ వయస్సులో వివాహం చేసికోవాలి ?

వైదిక కుటుంబ వ్యవస్థ స్త్రీ పురుషుల వివాహంతో ముడిపడి ఉంది. అటువంటి వివాహం స్త్రీ, పురుషులకు ఏ వయసులో జరగాలి ? ఏవర్ణం వారితో జరగాలి ? వివాహం ఎన్ని రకాలుగా ఉంటుంది ? ఎటువంటి యువతిని యువకుడు పెండ్లి చేసికోవాలి ? స్త్రీ, పురుషులు అనేక వివాహాలు చేసికొనడం యోగ్యమా ? కాదా ? గర్భధారణ సమయంలో భార్యాభర్తలు తీసికొనవలసిన జాగ్రత్తలేమిటి ? ఋతుకాలమంటే ఏమిటి ? దంపతులు ఎంత మంది సంతానాన్ని కనవచ్చును ? స్త్రీ, పురుషులను దూషితులుగా చేసే దుర్గుణాలేమిటి ? నియోగమంటే ఏమిటి ? నియోగం వేదసమ్మతమా ? పునర్వివాహానికి నియోగానికి తేడా ఏమిటి ? నియోగంలోని ఉద్దేశ్యం ఏమిటి ? నియోగంలోని నియామాలేమిటి ? దేవరుడంటే ఎవరు ? నియోగం ద్వారా స్త్రీ, పురుషులు ఎంతమందిని కనవచ్చును ? మొదలైన విషయాలను మహర్షి దయానందులు తమ సత్యార్థ ప్రకాశం 45 సముల్లాసంలో విశేషంగా వివరించి యున్నారు. సంక్షిప్తంగా ఆ విషయాలనిక్కడ ప్రశ్నోత్తర రూపంగా వివరించడానికి ప్రయత్నిస్తాను. స్త్రీ, పురుషులు రతి సమయంలో తీసికొనవలసిన జాగ్రత్తలేమిటి ? కామకళ మొదలైన విషయాలు కూడ నూతన వధూవరులనుద్దేశించి సంక్షిప్తంగా వివరించడం జరుగుతుంది.

ప్రశ్న :- **వివాహం ఎందుకు చేసికోవాలి? దీనివల్ల స్త్రీ, పురుషులు ఒకరికొకరు బంధనంలో చిక్కి మిక్కిలి సంకుచితులై దుఃఖాన్ని అనుభవించ వలసి వస్తుంది. అందుచేత ఎవరికి ఎవరిమీద ప్రీతి - ఇష్టం - మనస్సు ఉంటుందో వారితో కలిసి ఉండి వారి ఎడ ప్రీతి తొలగగానే ఒకరి నుండి మరొకరు వేరుపడిపోవడం ఉచితం కదా ?**

జవాబు :- ఇది పశుపక్షుల వ్యవహారం కాని మనుష్యుల వ్యవహారం కాదు. మనుష్యుల్లో వివాహ నియమాలులేనట్లయితే గృహాశ్రమం - కుటుంబ వ్యవస్థలోని మంచి వ్యవహారాలన్నీ చెడి నశించి పోతాయి. ఒకరినొకరు సేవించరు. ఇంతేకాక వ్యభిచారం ప్రబలి అందరూ రోగులు బలహీనులు, అల్పాయుష్కులై త్వరగా మృత్యువాత పడతారు. ఒకరితో ఒకరికి భయంగాని, లజ్జగాని కలుగవు. వృద్ధాప్యంలో ఒకరు మరొకరికి సేవ చేయడంగాని రక్షించడం గాని ఉండదు. జనుల్లో వ్యభిచారం అధికంగా ప్రబలి అందరూ రోగులు, నిర్బలులు అల్పాయుష్కులై కులాలకు కులాలే నిర్మూలమై పోతాయి. ఒకని పదార్థాలకు వస్తువులకు ఆస్తిపాస్తులకు మరొకరు అధికారి గాని, దాయభాగి కాని కాజాలక పోతాడు. ఒకనికొక పదార్థంపైన దీర్ఘకాల పర్యంతం అధికారం - హక్కు ఉండదు. ఇలాంటి దోషాలను నివారించడానికి అన్నివిధాల వివాహమే యోగ్య మయింది.

ప్రశ్న :- ఏ వయసులో కన్యాపరులు వివాహమాడాలి ? వారి విద్య, రూప, గుణ, కర్మ, స్వభావాల్లో తేడాలున్నప్పటికి వివాహం చేసికోవచ్చునా ?

జవాబు :- త్రీణి వర్షాణ్యుదీక్షేత కుమారీ ఋతుమతీ సతీ ।
ఊర్ధ్వంతు కాలా దేతస్మాద్విందేత సదృశం పతిమ్ ॥ - మను. 9-90.

కన్య రజస్వలయిన తరువాత మూడు సంవత్సరాల వరకు అంటే ప్రతి నెల రజస్వల అవుతూ 36 పర్యాయాలు రజస్వల అయ్యే వరకు తనకు యోగ్యుడైన పురుషుని వెదకుతూ తనతో సమానమైన విద్య, రూప, గుణ, కర్మ, స్వభావాలు కలిగిన వానిని వివాహ మాడడం ఉచితమవుతుంది. అంతకు పూర్వం వివాహమాడుకూడదు. కారణమేమంటే కన్య శరీరంలోని ధాతువులు పరిపుష్టమై ఆరోగ్యకరమైన సంతానం కనడానికి తగిన శరీర దారుఢ్యం అప్పుడు గాని ఆమెకు కలుగదు.

కామ మా మరణాత్తిష్ఠే ద్గృహే కన్యర్తు మత్యపి। న చైవైనాం ప్రయచ్ఛేత్తు గుణహీనాయ కర్హిచిత్ ॥ - మను. 9-82

స్త్రీ పురుషులు మరణ పర్యంతం వివాహం లేకుండ బ్రహ్మ చారులుగ ఉంటే ఉండవచ్చును గాని, అసదృశులకు - పరస్పర విరుద్ధ గుణ, కర్మ స్వభావాలు కలవారికి వివాహం ఎప్పటికి చేయకూడదు. పైన చెప్పిన సమయానికి ముందుగాని, అసదృశులకు వివాహం గాని జరగడం యోగ్యమైంది కాదని దీనివల్ల స్పష్టమైంది.

కం. నెయ్యమునకు కయ్యమునకు

వియ్యమునకు సమతవలయు వేరొండైనన్
కయ్యము గెలువదు జగమున నెయ్యము
వియ్యంబు పొసగ నేరదు సుమతీ ॥

వివాహ సంబంధం, జగడం, స్నేహం ఇవి సమానమైన వారితో కుదురుతాయి గాని అసమానుల్లో ఇవి శోభిల్లవు – రాణించవు అన్నాడు సుమతీ శతక కారుడు.

యుక్తకాలానికి – వివాహ యోగ్యమైన వయస్సునకు లోపల స్త్రీ, పురుషులకు గర్భాదానం చేయడం మంచిది కాదని ధన్వంతరి ముని తన సుశ్రుతంలో చెప్పాడు చూడండి.

ఊన షోడశ వర్షాయా మప్రాప్తః పంచవింశతిమ్ ।
యద్యాధత్తే పుమాన్ గర్భం కుక్షిస్థః స విపద్యతే।
జాతో వా న చిరంజీవే జ్జీవే ద్వా దుర్బలేంద్రియః ।
తస్మా దత్యంత బాలాయాం గర్భాదానం నకారయేత్ ॥

పదహారేండ్లు నిండని స్త్రీ యందు 25 ఏండ్లు నిండని పురుషుడు గర్భ స్థాపనం చేసేట్లయితే ఆగర్భంలో ఉండే శిశువు విపత్తు పొందుతుంది. అంటే పూర్ణ సమయం వరకు గర్భాశయంలో ఉండి ఉత్పన్నం కాదు. ఒకవేళ ఉత్పన్నమైనా – పుట్టినా, చిరకాలము జీవించదు. జీవించినప్పటికి బలహీనమైన శరీరాంగాలు ఇంద్రియాలు కలదవుతుంది. కాబట్టి మిక్కిలి బాల్యావస్థలో స్త్రీయందు పురుషుడు గర్భస్థాపన చేయకూడదు.

ప్రశ్న :– వివాహానికి మంచి సమయమేది ? మంచి పద్ధతి ఏది ?

జవాబు :– పదహారవ ఏట మొదలుకొని ఇరవై నాలుగేండ్ల వరకు కన్యకు, ఇరవై అయిదేండ్లు మొదలుకొని 48 ఏండ్ల వరకు పురుషుని వివాహానికి ఉత్తమ సమయం. 16 ఏట కన్య, 25వ ఏట పురుషుడు వివాహం చేసికుంటే అది అధమం. 18 లేక 20 వ ఏట స్త్రీ, 30, 35 లేక 40 వ ఏట పురుషుడు వివాహమాడితే అది మధ్యమం. 24వ ఏట స్త్రీ, 48వ ఏట పురషుడు వివాహమాడితే అది ఉత్తమం. ఏదేశంలో ఈవిధంగా శ్రేష్ఠ వివాహాలు బ్రహ్మచర్యం, విద్యాభ్యాసం అధికంగా వర్థిల్లుతాయో ఆదేశంలో సుకం వర్థిల్లుతుంది. ఏదేశంలో బ్రహ్మచర్య విద్యా గ్రహణాలు లేక బాల్యంలోనే వివాహం చేసి కుంటారో ఆదేశం దుఃఖంలో మునిగి పోతుంది. బ్రహ్మచర్యం ఉండి, విద్యలను గ్రహించి యిలా వివాహమాడేట్లయితే అంతా చక్కబడుతుంది. లేకుంటే అంతా చెడుతుంది.

ప్రశ్న :– స్వయంవర వివాహం శ్రేష్ఠమా పరాధీనంగా – తల్లిదండ్రుల ఇష్ట ప్రకారం వివాహం చేసికోవడం శ్రేష్ఠమా ?

జవాబు :– పైన చెప్పిన విధంగా ఋషులు, మునులు, రాజులు, మహారాజులు మొదలైన ఆర్య సజ్జనులు బ్రహ్మచర్యం పూని విద్యను చదివి స్వయంవర వివాహములను చేసికొంటున్నంత వరకు ఈ దేశం ఉన్నత స్థితిలో ఉంది. బ్రహ్మచర్యంతో కూడిన విద్యాధ్యయనం అడుగంటి బాల్యావస్థలో పరాధీనంగా – తల్లిదండ్రుల అధీనంలో వివాహం చేసికుంటున్నప్పటి నుండి క్రమంగా ఆర్యావర్త దేశానికి – భారతదేశానికి హాని కలుగ సాగింది. కాబట్టి ఈదుష్ట కార్యాన్ని వదలి సజ్జనులు పూర్వం మాదిరిగా స్వయంవర వివాహాలు చేసికోడం మంచిది. అయితే ఈ వివాహాలు వర్ణానుకూలంగా జరగాలి. వర్ణవ్యవస్థ గుణ కర్మ స్వభావాలను అనుసరించి ఉండాలి.

ప్రశ్న :– వర్ణం అంటే ఏమిటి ? అది పుట్టుకను బట్టి ఉంటుందా ? లేక గుణ కర్మలను బట్టి ఉంటుందా ?

జవాబు :– 'వృఞ్ వరణే' – కోరి తెచ్చుకొనే దాన్ని వర్ణం అంటారు. అంటే ఒక వ్యక్తి కోరి – ప్రయత్న పూర్వకంగా బ్రాహ్మణుడో, క్షత్రియుడో, వైశ్యుడో, శూద్రుడో కాగలడన్న మాట. వైదిక సంప్రదాయం మనుషుల్ని వారి వారి గుణ కర్మస్వభావాలను బట్టి బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్య శూద్రులని నాలుగు వర్ణాలుగా విభజించింది. ఈవర్ణ విభజన పుట్టుకను బట్టి కాక మనిషి కుండే గుణాలు, అతడు చేసే కర్మలు, అతని స్వభావాన్ని బట్టి నిర్ణయించబడుతుంది గురుకులాల్లో.

ప్రశ్న :– బ్రాహ్మణాది వర్ణాల వారి గుణ కర్మ స్వభావాలు ఎలా ఉంటాయో వివరించండి.

జవాబు :– బ్రాహ్మణుని గుణ కర్మ స్వభావాలివి.

అధ్యాపన మధ్యయనం యజనం యాజనం తథా దానం పరిగ్రహశ్చైవ బ్రాహ్మణా నా మకల్పయత్ ॥ –మను. 1–88

శమో దమ స్తపః శౌచం క్షాంతి రార్జవ మేవ చ । జ్ఞానం విజ్ఞాన మాస్తిక్యం& రబహ్మకర్మ స్వభావజమ్ ॥ –గీత. 18–42

బ్రాహ్మణునికి వేదాలు చదవడం, చదివించడం, యజ్ఞం చేయడం చేయించడం, దానమివడం పుచ్చుకోవడం అనేవి ఆరు కర్మలు, అయితే 'ప్రతి గ్రహః ప్రత్యవరః' – ప్రతిగ్రహం – దానం పుచ్చుకోవడం నీచ కర్మ అన్నాడు మనువు. **శమం** మనస్సులో చెడ్డ పని చేయాలనే కోరిక కూడ పుట్టనీయక ఉండడం. మనస్సును అధర్మంలో ఎన్నటికి ప్రవర్తింపనీయక ఉండడం. **దమం** – చెవి, కన్ను మొదలైన ఇంద్రియాలను అన్యాయా చరణం నుండి తొలగించి ధర్మము నందే నడిపించడం. **తపః** – సదా బ్రహ్మచారి, జితేంద్రియుడునయి ధర్మానుష్ఠానం చేయడం. **శౌచం** –

అద్భిర్ గాత్రాణి శుధ్యంతి మనః సత్యేన శుధ్యతి । విద్యా తపోభ్యాం భూతాత్మా బుద్ధిర్ జ్ఞానేన శుధ్యతి ॥ –మను. 5–10

జలంచేత – స్నానాదుల చేత వెలుపలి అంగాలు, సత్యాన్ని ఆచరించడం వలన మనస్సు విద్యా, ధర్మ అనుష్ఠానాల చేత జీవాత్మ, జ్ఞానం చేత బుద్ధి, పవిత్రమలవుతాయి. లోపలి రాగ ద్వేషాది దోషాలను, వెలుపలి మలాలను దూరం చేసి శుద్ధంగా ఉండడం చేత వివేచనా పూర్వకంగా సత్యాన్ని గ్రహించి అసత్యాన్ని త్యజించడం చేత మనుష్యుడు నిశ్చయంగా పవిత్రుడవుతున్నాడు. ఇదేశౌచం. **క్షాంతి** – నిందాస్తుతుల్లో, సుఖ దుఃఖాల్లో, సీతోష్ణాల్లో, ఆకలి దప్పికల్లో, హాని లాభాల్లో, మాన అవమానాల్లో, హర్ష శోకాల్లో ఓర్పుతో ఉండి ధర్మాచరణంలో దృఢ నిశ్చయుడై ఉండడం. **ఆర్జవం** – కోమలత – నిరభిమానం, సరళత – సరళ స్వభావం కలిగి ఉండడం. కుటిలతాది దోషాల్ని వదలి వేయడం. **జ్ఞానం**

- సమస్త వేదాది శాస్త్రాన్ని సాంగోపాంగంగా చదివి, చదివించే సామర్థ్యం, వివేకం, సత్య నిర్ణయం, ఏవస్తువు ఎలా ఉన్నదో దానినలాగే - జడాన్ని జడంగా చేతనాన్ని చేతనంగా తెలియడం, నమ్మడం, **విజ్ఞానం** - పృథివి మొదలు పరమేశ్వర పర్యంతమున్న పదార్థాలను విశేషంగా తెలిసికొని వానిని యథా యోగ్యంగా ఉపయోగించుకొనడం, **ఆస్తిక్యం** - వేదం, ఈశ్వరుడు, ముక్తి, పూర్వాపర జన్మలు, ధర్మం, విద్య, సత్సంగం, మాత, పిత, గురువు, అతిథి సేవలను ఎప్పుడు విడువక, వీరినెప్పుడూ నిందింప కుండడం ఆస్తిక్యం. ఈ 15 గుణకర్మలు బ్రాహ్మణ వర్ణస్థులకు అవశ్యంగా ఉండాలి. క్షత్రియులకు -

ప్రజానాం రక్షణం దాన మిజ్యాధ్యయన మేవచ।
విషయేష్వ ప్రసక్తిశ్చ క్షత్రియస్య సమాసతః ॥
-మను. 1-86

శౌర్యం తేజో ధృతి ర్దాక్ష్యం యుద్ధే చాప్యపలాయనం
దాన మీశ్వర భావశ్చ క్షాత్రం కర్మ స్వభావజమ్ ॥
-గీత 18-43

న్యాయంగా ప్రజల్ని రక్షించడం, పక్షపాతం వదలి శ్రేష్ఠుల్ని సత్కరించడం, దుష్టుల్ని తిరస్కరించడం, అన్ని విధాల అందరిని పాలించడం, **దానం** - విద్య, ధర్మముల ప్రచారంలోను పాత్రత గలవారి సేవలోను ధనాది పదార్థాలను వ్యయ పరచడం, **ఇజ్య** - అగ్నిహోత్రాది **విషయేశ్చ** - విషయ సుఖములందు అతిగా చరినిచక జితేంద్రియుడయి ఎప్పుడూ శరీరాన్ని ఆత్మను బలిష్టంగా ఉంచు కోవడం, **శౌర్యం** - వందల కొలది శత్రువులతో ఒంటరిగా యుద్ధం చేయడానికి భయపడకుండడం, **తేజం** సదా తేజస్వి - దైన్యము - దుఃఖమును విడిచి ప్రగల్భుడు - ప్రతిభ గలవాడై దృఢంగా ఉండడం, **ధృతి** - ధైర్యంగా ఉండడం, **దాక్ష్యం** - రాజప్రజా సంబంధమైన వ్యవహారాల్లోను సమస్త శాస్త్రాల్లోను అతిచరుడై ఉండడం **యుద్ధే** - యుద్ధంలో దృఢంగా నిశ్శంకుడుగా ఉండి వెనుదీయక, పరుగెత్తకుండ ఉండడం - తనను బ్రతికించుకొని నిశ్చయంగా విజయం కలుగు విధంగా యుద్ధం చేయడం, ఒక వేళ తాను పరుగెత్తి పోవడం చేతగాని, శత్రువుల్ని మోసపుచ్చడం చేతగాని విజయం కలిగేట్లయితే అలాగే చేయడం. **దానం** - దానగుణం కలిగి ఉండడం. **ఈశ్వరభావం** - పక్షపాతం లేక అందరితో యథాయోగ్యంగా వర్తించడం, విచారించి యివ్వడం, ప్రతిజ్ఞను నెరవేర్చడం, ప్రతిజ్ఞాభంగం చేయకుండడం అనే ఈపదునొకండు క్షత్రియ వర్ణ గుణ కర్మలు. - వైశ్యలకు

పశూనాం రక్షణం దాన మిజ్యాధ్యయన మేవచ।
వణిక్పథం కుసీదం చ వైశ్యస్య కృషిమేవ చ॥
-మను. 1-90

పశురక్షణ - గోవులు మొదలైన జంతువుల్ని పాలించడం, వృద్ధిపరచడం **దానం** - విద్యా ధర్మాలను వర్థిల్లజేయడానికి ధనాదుల్ని వ్యయ పరచడం, **ఇజ్య** - అగ్నిహోత్రాది యజ్ఞాలను చేయడం, **అధ్యయనం** - వేదాది శాస్త్రాలను చదవడం **వణిక్పథమ్** - అన్ని విధాలుగా వ్యాపారం చేయడం, **కుసీదమ్** - అధికంగా వడ్డీ తీసికొనకుండ అప్పివ్వడం, **కృషి** - వ్యవసాయం చేసి పొలాలను పండించడం ఇవి వైశ్యుని గుణకర్మలు. శూద్రునికి -

ఏకమేవతు శూద్రస్య ప్రభుః కర్మసమాదిశత్।
ఏతేషామేవ వర్ణానాం శుశ్రూషా మనసూయయా॥ -మను. 1-91

నింద, ఈర్ష్య, అభిమానాది దోషాలను వదలి బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్యుల సేవ యథారీతిగా చేస్తూ అందువలన తాను జీవించడం ఒక్కటే శూద్రుని గుణకర్మము.

ప్రశ్న :- పై వర్ణముల వారు వర్ణాంతర వివాహాలు - ఒక వర్ణపు స్త్రీ, పురుషులు మరొక వర్ణం వారిని చేసికొనవచ్చునా ?

జవాబు :- గుణ కర్మలను బట్టి వర్ణము స్త్రీలకు పదహారవ ఏట, పురుషునకు ఇరువది అయిదవేట పరీక్షించి నిర్ణయించబడుతుంది. బ్రాహ్మణుడు బ్రాహ్మణ స్త్రీని, క్షత్రియుడు క్షత్రియ స్త్రీని, వైశ్యుడు వైశ్య స్త్రీని, శూద్రుడు శూద్ర స్త్రీని వివాహమాడాలి. అప్పుడే వారి వారి వర్ణ కర్మలు పరస్పరం ప్రీతి, యథా యోగ్యంగా ఉంటాయి.

ప్రశ్న : వివాహాలు ఎన్ని రకాలు ? అవేవి ?

జవాబు :- బ్రాహ్మోదైవస్తథైవార్షః ప్రాజాపత్యస్తథా సురః ।
గాంధర్వోరాక్షసశ్చైవ పైశాచ శ్చాష్టమోధమః
మను. 3-21

వివాహం ఎనిమిది విధాలుగా ఉంది. బ్రాహ్మము, దైవము, ఆర్షము, ప్రాజాపత్యము, ఆసురము, గాంధర్వము, రాక్షసము, పైశాచము అని.

1. బ్రాహ్మము :- కన్యావరులిద్దరు యథారీతిగా బ్రహ్మచర్యంలో ఉండి, పూర్ణ విద్వాంసులు, ధార్మికులు, సుశీలురు - మంచి శీల సంపద కలిగి పరస్పరం ప్రసన్నులై వివాహమాడడం బ్రాహ్మమనబడుతుంది.

2. దైవము :- విస్తృతమైన యజ్ఞ కార్యంలో ఋత్విక్‌గా యజ్ఞ కర్మను నిర్వహించే అల్లునికి అలంకార యుక్తురాలయిన కన్య నిచ్చుట దైవము.

3. ఆర్షము :- వరుని నుండి యేమైన కొంచెం (కట్నము) తీసికొని వివాహం చేయడం ఆర్షం.

4. ప్రాజాపత్యము :- ధర్మాభివృద్ధి కొఱకు ఇద్దరు వివాహమాడడం ప్రాజాపత్యం.

5. ఆసురము :- కన్యావరులకు ఏమైనా కొంత యివ్వడం ద్వారా వివాహం అయితే అది ఆసురం.

6. గాంధర్వము :- నియమము, సమయము అని లేక ఏదో ఒక కారణం చేత కన్యా వరులు యిచ్చా పూర్వకంగా పరస్పరం ఏకమవడం గాంధర్వం.

7. రాక్షసము :- జగడమాడి బలాత్కారంగా తీసికొనిపోయి అకస్మాత్తుగా గాని, మోసం చేతగాని కన్యయను గ్రహించడం రాక్షసం.

8. పైశాచము :- నిద్రిస్తున్నదో, త్రాగిమైమరచినదో, పిచ్చిపట్టినదో అయిన కన్యతో బలత్కారంగా సంయోగం చేయడం పైశాచం.

ఈ వివాహాలన్నింటిలో బ్రాహ్మ వివాహం అన్ని విధాల ఉత్తమం. దైవ, ప్రాజాపత్యాలు

మధ్యమాలు. ఆర్ష, ఆసుర, గాంధర్వాలు నకృష్టాలు. రాక్షసం అధమం. పైశాచం మహాభ్రష్టం అని తెలియాలి.

పూర్వం గురుకుల వ్యవస్థ అమలులో ఉండేది. విద్యార్థులకు విద్యార్థినులకు వేరు వేరు గురుకులాలుండేవి. ఆగురుకులల్లో వారి విద్య పూర్తి కావడానికింకా ఆరు నెల్లో, సంవత్సరమో ఉన్నదనగా, కన్యావరుల ప్రతి బింబాలు (ఇప్పుడు ఫోటోలు) తెప్పించి వారి గుణ గణాలు, అభిరుచులను తెలిపే సమాచారాన్ని కూడ తెప్పించి, కన్యావరులు పరస్పరం ఇష్ట పడిన విధంగా స్వయంవర వివాహాలు గురువుల సన్నిధిలో జరిగేవి. లేకపోతే కన్యతల్లిదండ్రుల ఇంట్లో జరిగేవి.

ప్రశ్న :- వివాహం ఏయే కుటుంబాల్లో చేసికోరాదు ?

జవాబు :- మహాన్త్యపి సమృద్ధాని గో జా విధన ధాన్యతః । స్త్రీ సంబంధే దశైతాని కులాని పరివర్జయేత్ ॥ -మను. 3-6

ధనం, ధాన్యం, గోవులు, మేకలు, ఏనుగులు, గుఱ్ఱాలు, రాజ్యం మొదలైన వానితో సమృద్ధంగా ఉన్నప్పటికి వివాహ సంబంధానికి ఈ క్రింద వ్రాయబడిన వదికులాలు త్యాజ్యములు - విడిచిపెట్టదగినవి.

హీన క్రియం నిష్పురుషం నిశ్ఛన్దో రోమ శార్శనమ్ ।
క్షయ్యా మయా వ్యపస్మారి శ్విత్రికుష్ఠి కులాని చ॥ - మను. 3-7

సత్క్రియలు సల్పనిది, సత్పురుషులు లేనిది, వేదాధ్యయనానికి విముఖంగా ఉండేది, శరీరంలో పెద్ద వెంట్రుకలు కలది, మూలవ్యాధి; క్షయ, ఉబ్బసం, దగ్గు, ఆమాశయము జీర్ణకోశ సంబంధమైన వ్యాధులు గలది, సొమ్మరోగం, శ్వేత కుష్ఠు, గలిత కుష్ఠు మొదలైనవి కలిగిన కుటుంబాల్లోని కన్యలతో గాని, వరులతో గాని వివాహ సంబంధం ఎప్పటికి కూడదు. ఎందుకంటె ఈ వ్యాధులు వివాహం చేసికున్న వారి ఇండ్లల్లో కూడ ప్రవేశిస్తాయి.

ప్రశ్న :- ఎటువంటి కన్యను వివాహమాడరాదు ?

జవాబు :- నోద్వ హేత్కపిలాం కన్యాం నాధికాంగీం న రోగిణీం ।
నాలోమికాం నాతిలోమాం నవాచా టాన్నపింగలామ్ ॥ -మను. 3-8

కపిల - గోరోజన వర్ణము కలది, అధికాంగిని - పురుషుని కంటె ఎక్కువ లావు, పొడవు, బలం కలది, రోగవతిని, వెంట్రుకలు లేనిది, మిక్కిలి ఎక్కువగా వెంట్రుకలు కలది అధిక ప్రసంగం చేసేది, పిల్లికన్నులు కలది, అయిన కన్యను వివాహమాడరాదు.

ప్రశ్న :- ఏపేరు పెట్టుకున్న కన్యను వివాహమాడరాదు ?

జవాబు :- నక్షన్ వృక్ష నదీ నామ్నీం నాంత్య పర్వత నామికాం ।
న పక్ష్యహి ప్రేష్య నామ్నీం న చ భీషణ నామికాం ॥ -మను. 3-9

నక్షత్ర నామాలు - అశ్వని, భరణి, రోహిణి, రేవతి, చిత్ర మొదలైన నామాలు కలది, తులసి, చేమంతి, గులాబి, చంపక, మొల్ల మొదలైన మొక్కల పేర్లు కలది, గంగ, యమున, మొదలైన నదుల పేర్లు కలది, చండాలి మొదలైన నీచ నామాలు గలది, వింధ్య, హిమాలయ, పార్వతి మొదలైన పర్వత నామాలు కలది, కోకి, శారిక - (గోరు వంకపిట్ట) మొదలైన పక్షి నామాలు కలది, నాగి, భుజంగి, శేషి మొదలైన సర్పనామాలు కలది, భీమ కుమారి, చండిక, కాళి మొదలైన భయంకర నామాలు కలది, మాధవ దాసి, మీరాదాసి, మొదలైన నీచ నామాలు కలది అయిన కన్యలను వివాహమాడకూడదు. ఎందులకనంటె వీటిలో కొన్ని కుత్సితములు - నికృష్ట - నీచనామాలు, కొన్ని ఇతర పదార్థనామాలయి ఉన్నాయి. బిడ్డలకు పెట్టేపేరు అర్థవంతంగ - ఔన్నత్యాన్ని సుగుణాల్ని, సామర్థ్యాన్ని తెలిపేవిగా ఉండాలి.

ప్రశ్న :- ఎటువంటి శుభలక్షణాలు గల కన్యను వివాహమాడాలి ?

జవాబు :- యోగ్యమైన ప్రమాణము (ఎత్తు) కలిగి వంకర టింకరలు లేని అవయవాలు కలది, యశోద - కీర్తినిచ్చేది, సుఖద - సుఖాన్నిచ్చేది మొదలైన సుందర నామాలు కలది, హంస ఏనుగుల నడక కలది, సూక్ష్మములైన వెంట్రుకలు కలది, మంచి దంతములు, కోమలమయిన శరీరం కలది, అయిన కన్యను వివాహమాడడం ఉచితమౌతుంది.

-చలవాది సోమయ్య

अखंड गायत्री महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न

युगादी पर्व के अवसर पर नववर्ष श्री दुर्मुख नामक २०७३ विक्रम संवत् दि. ८ अप्रेल २०१६ शुक्रवार के दिन आर्य समाज बोईन पल्ली के मंत्री ब्रहस्पति गुरुजी ने समाज भवन के परिसर में प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक अखंड गायत्री मंत्र पाठ का आयोजन किया । उसमे नगरद्वय तथा खास कर आर्य समाज बोईन पल्ली के धर्मप्रमी बंधुओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया और अपनी ओर तीन तीन अहुतियां देकर यज्ञ को सफल बनाया । दिन भर चले इस यज्ञ में पं. कणाद आर्यजी अखंड गायत्री मंत्र पाठ करते रहे ।

समाज के प्रधान वरुणराज एवं अंजीरेड्डी ने अपनी ओर से आने वाले सभी धर्म प्रेमियों के भोजन का प्रवन्ध किया ।

ब्रहस्पती गुरुजी ने वडे आत्म विश्वास से के साथ इस यज्ञ का आयोजन कर उसे सफल बनाया इस कार्यक्रम में सभा के कोपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, पुरोहित श्री पं. प्रियदत्त शास्त्री सभा कार्यालय के श्रीनिवास राव एवं अमर कुमार उपस्थित रहें।

- आर्य समाज बोईन पल्ली

Arya Jeevan

पाक के प्रति महाशक्तियों की विडंबनापूर्ण कूटनीति

प्रसंगवश

प्रभात कुमार राय

भारतीय उप महाद्वीप के एक ही सांस्कृतिक-सामाजिक कुनबे के दो राष्ट्रों भारत और पाकिस्तान के मध्य परस्पर ताल्लुकात जब कभी भी बेहतरी की ओर पंहुचते हैं, तभी अकस्मात ऐसा कुछ घटित हो जाता है कि बेहतरी की तरफ कदम बढ़ाते हुए कूटनीतिक संबंध धराशाही हो जाते हैं। पठानकोट पर आतंकवादी आक्रमण के पश्चात जब हुकूमत-ए-पाकिस्तान ने भी इस आक्रमण की भर्त्सना की और आतंकवादियों के बरखिलाफ सख्त कार्यवाही करने का भरोसा दिलाया तो ऐसा प्रतीत हुआ कि पाकिस्तान ने जेहादी आतंकवाद के परिपोषण नीति का परित्याग करने का इरादा बना लिया है। भारत द्वारा पाकिस्तान पर संपूर्ण सदाशयता के साथ कूटनीतिक विश्वास किया गया और पाकिस्तान की ज्वांइट इन्वेस्टिगेटिव टीम (जेआईटी) को पठानकोट आतंकवादी आक्रमण की तहकीकात अंजाम देने की बाकयादा इजाजत प्रदान कर दी गई। पाक जेआईटी के वापस लौट जाने के बाद भारत में पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जनाब अब्दुल बासित ने जो कुछ भी फरमाया है वो हैरान और अचंभित करने वाला है। अब्दुल बासित फरमाते हैं कि भारत के साथ प्रारम्भ की गई शांति वार्ता प्रक्रिया को पाकिस्तान द्वारा खत्म कर दिया गया है। हाई कमिश्नर अब्दुल बासित द्वारा शांति वार्ता की प्रक्रिया समाप्त करने की वजह बताई गई कि भारत उनकी सरजमीं पाकिस्तान में अशांति उत्पन्न कर रहा है। पाकिस्तान वर्षों से स्वयं मुजाहिद आतंकवाद का शिकार रहा है और पाकिस्तान में अंशाति का फैलाने बेबुनियाद इल्जाम वह भारत पर थोप रहा है। क्या विश्व नहीं जानता कि तालिबान तंजीम को पाकिस्तान फौज और पाक खुफिया ऐजेंसी आईएसआई द्वारा परिपोषण और सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया गया था? क्या पाक फौज और आईएसआई अपने कथित गुड जेहादियों को पाक अधिकृत कश्मीर स्थित सैन्य शिवरों में गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्रदान नहीं कर रही है? तहरीक-ए-तालिबान ने हाल ही में लाहौर में भयानक बम धमाका किया है। क्या तहरीक-ए-तालिबान के जंगजू जेहादियों से पाकिस्तान की फौज अपने सरहदी पश्चिमोत्तर इलाकों में विगत दो वर्षों जूझ नहीं रही है। जिसके तहत अभी तक तकरीबन सत्तर हजार लोग मारे जा चुके है और लगभग सात लाख नागरिक पलायान कर चुके है। पाकिस्तान में निरंतर विस्तारित होती जा रही आतंकवादी अशांति के लिए कोई अन्य नहीं, वरन पाकिस्तान की अपनी आत्मघाती नीतियां ही सबसे अधिक जिम्मेदार नहीं है। क्या स्वप्न में भी तहरीक-ए-तालिबान को भारत सरकार सहायता प्रदान कर सकती ,जो कि भारत पर आतंकवादी कहर बन टूट रही हैं।

पाकिस्तान राजसत्ता के पाखंडी दोहरे चरित्र की हकीकत के विषय में क्या अमेरिका जानता नहीं है।अमेरिका पर 9/11 आक्रमण में अहम किरदार अदा करने वाले दुर्दान्त मुजाहिद ओसामा बिन लादेन का खात्मा करने से पूर्व हुकूमत-ए-पाकिस्तान को विश्वास में क्यों नहीं लिया था। पाकिस्तान की पाखंडी हकीकत से बखूबी वाकिफत रखने वाला अमेरिका आखिर क्यों पाकिस्तान को एफ-16 फाइटर्स विमानों की खेप प्रदा कर रहा है , ताकि भारत सरीखे शांतिप्रिय राष्ट्र की पाकिस्तान नींद हराम कर सके ! क्या अमेरिका नहीं जानता कि उसके लिए दर्द-ए-सर बने हुए उत्तरी कोरिया को न्युक्लियर बमों का निर्माण करने की तकनीकी जानकारी हुकूमत-ए-पाकिस्तान ने ही कंपे दामों में बेची थी? सांमती चरित्र की दोहरी राजसत्ता वाले पाकिस्तान में वस्तुतः राजनीतिक पक्ष और विपक्ष राजनीतिक दल और पाक फौज रहे है। लोकतंत्र का पाखंड करता हुआ, पाकिस्तान इस्लामिक कट्टरता से लबरेज राष्ट्र है, जिसकी बुनियाद पर उसका निर्माण किया गया था। पाकिस्तानी राजसत्ता की रग- रग में भारत के प्रति गहरी नफरत की भावना व्याप्त रही और अपने जालिमाना कुकर्मों से बंगलादेश का निर्माण करने के पश्चात तो पाकिस्तान, सन 1978 से पहले पंजाब में और फिर सन 1988 कश्मीर में भारत का विघटन करने के लिए प्राक्सी वॉर का नाकाम संचालन करता रहा है। इन सभी संजीदा हकीकतों की तरफ से

आंखें बंद किए हुए अमरिका द्वारा दुर्भाग्यवश सदैव पाकिस्तान को अपने पसंदीदा मुल्कों की जमात में शामिल रखा गया। जबकि अमेरिका का विध्वंस करने का अहद लेने वाले मुजाहिदों का निर्माण करने वाली सबसे बड़ी फैक्टरी पाकिस्तान रहा।

चाइना की लाल फौज वर्षों से अपने झिंगयांग प्रांत में उईगर जेहादियों की सशस्त्र बगावत से लोहा ले रही है, ठीक उसी तरह जैसे भारतीय फौज कश्मीर में पाकपरस्त जेहादियों से लोहा ले रही है। अंतर्राष्ट्रीय जेहाद के विरुद्ध सामान्य हितों की तिलांजलि देकर यूएन में बड़ी बेशर्मी से भारत के विरुद्ध पाक के दुर्दान्त जेहादियों के पक्ष में चाइना कूटनीतिक तौर पर खड़ा दिखाई दिया। चाइना की यह कैसी कुटिल कूटनीति है जो कि अपने राष्ट्र के हितों को अनदेखी करके दुर्दान्त मुजाहदों की हिमायत कर रही है। भारत के विरुद्ध पाकिस्तान की हिमायत में अंध कूटनीतिक रवैया अख्त्यार करने वाला राष्ट्र बन रहा है चाइना। पाकिस्तान द्वारा अवैध तौर पर अधिकृत कश्मीर के एक बड़े इलाके को चाइना के हवाले कर दिया गया ताकि कश्मीर के मसले पर चाइना की अंध हिमायत उसे प्राप्त हो सके। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पाकिस्तान अपनी कुटिल कूटनीति में कामयाब है क्योंकि चाइना ने अपने हितों की उपेक्षा करके पाक प्रभाव आकर में खूंखार बर्बर मुजाहिदों की पैरवी यूएन में शुरू कर दी। शंघाई सहयोग संगठन का मुख्य मकसद आतंकवाद और अलगाववाद के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष करना तय किया गया है किंतु आतंकवादी मुजाहिदों की हिमायत अंजाम देकर चाइना ने शंघाई सहयोग संगठन के पवित्र मकसद से दगा किया है। रशिया जो कि भारत का परंपरागत रुप से निकट मित्र रहा है और भारत को रशिया से दोस्ती पर सदैव बेहद भरोसा और नाज रहा है। रशिया ने यूएन में संकट की घड़ियों भारत के हक में कश्मीर के प्रश्न पर दो बार वीटो किया था। वही रशिया आजकल पाकिस्तान के साथ अपनी निकटता बढ़ना चाहता है और यह समझते बूझते हुए कि उसके इस कदम से भारत के साथ रशिया के गहन ताल्लुकात में दरार पड़ सकती है। रशिया स्वयं भी बर्बर जेहादी आतंकवाद का शिकार रहा है फिर वही कूटनीतिक गलती कर रहा है, जो कि अमेरिका ने पाकिस्तान को प्रश्रय प्रदान करके अंजाम दी है। यह कैसी विडंबना है कि विश्व शक्तियां आतंकवाद के खात्मे की बातें तो करती हैं किंतु जेहादी आतंकवाद के सबसे बड़े परिपोषक राष्ट्र पाकिस्तान की कूटनीतिक हिमायत के साथ उसे खतरनाक हथियारों से लैस करती रही हैं, जो कि भविष्य में तालीबान के हाथों में पड़ सकते हैं, फिर तो पछतावे का वक्त भी विश्व शक्तियों के पास नहीं होगा।

(लेखक सुरक्षा परिषद के सलाहकार रहे हैं, संपर्क 09319310533)

चाइना की लाल फौज वर्षों से अपने झिंगयांग प्रांत में उईगर जेहादियों की सशस्त्र बगावत से लोहा ले रही है, ठीक उसी तरह जैसे भारतीय फौज कश्मीर में पाकपरस्त जेहादियों से लोहा ले रही है. अंतर्राष्ट्रीय जेहाद के विरुद्ध सामान्य हितों की तिलांजलि देकर यूएन में बड़ी बेशर्मी से भारत के विरुद्ध पाक के दुर्दान्त जेहादियों के पक्ष में चाइना कूटनीतिक तौर पर खड़ा दिखाई दिया। चाइना की यह कैसी कुटिल कूटनीति है।

Date: 18-04-2016

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-04-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 100/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

राम नवमी जन्म दिवस पर विशेष

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी

– स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

महान पुरुषों की सफलता का रहस्य होता है उनकी संकल्प शीलता, कर्मठता, दृढ़ता, लगन और निष्ठा। सामान्य जन के मनोरथ उठते हैं और विलीन हो जाते हैं। धुन के पक्के अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिए पागल हो जाते हैं और अपनी सफलता से संसार को आश्चर्य चकित कर देते हैं। विभिन्न शास्त्रार्थों में विजयश्री का वरण करने वाले, युक्ति और तर्कों के महान् धनी, हृदयस्पर्शी वाणी के स्वामी आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रवल मण्डनकर्त्ता पं. रामचन्द्र देहलवी अपनी विद्वत्ता, तार्किकता, वाग्मिता आदि गुणों के लिए विद्वन्मण्डली में सदा अमर रहेंगे।

सन् 1881 की राम नवमी को आपका जन्म हुआ और माता-पिता ने बड़े प्यार तथा प्रसन्नता से नाम रामचन्द्र रखा। कुशाग्र बुद्धि बालक कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में भी 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' की उक्ति को चरितार्थ करने लगा। अपनी कक्षा में प्रथम अथवा द्वितीय स्थान पर रहते हुए अध्यापकों के आशीर्वाद प्राप्त करते रहे। मिडिल की परीक्षा की उत्तीर्णता के पश्चात् इनके पिता जी ने पढ़ाई की स्वीकृति नहीं दी परन्तु विद्याभिलाषी बालक अपनी सूझ-बूझ से अध्ययन करता रहा और एन्ट्रेन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। शिक्षा का क्रम यहीं पर समाप्त हो गया। स्वाध्याय उनके ज्ञान का आधार बना।

अल्पावस्था में ही इनको पारिवारिक विवशताओं ने वैवाहिक बन्धन में बाँध दिया। परिवार का उत्तरदायित्व, आर्थिक उलझनें इनको उलझा न सकीं, निष्काम कर्मयोगी के सदृश उत्तरदायित्वों का निर्वाह भी करते रहे और अपने ज्ञान की अभिवृद्धि भी करते रहे। अपने को ज्ञान-समर्थ बनाने हेतु सफल प्रयास किया।

स्वाभिमानी, कर्मण्यता के धनी इस महान व्यक्तित्व ने रुकना-झुकना नहीं जाना। सर्विस का त्याग किया परन्तु झुके नहीं। पारिवारिक परिस्थितियाँ उलझनों से भरी थीं। आर्थिक दुरवस्था थी, वच्चे छोटे-छोटे थे और सहचारिणी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया परन्तु कर्मयोगी अपने पथ से विचलित नहीं हुआ। धर्म-प्रचार चलता रहा शास्त्रार्थ होते रहे, विधर्मियों के मुख बन्द होते रहे और आर्य समाज के सिद्धान्तों के विजय की पताका फहराती रही और वैदिक मान्यताएं मनवाई जाती रही। ऐसे कर्मयोगी को शतशः नमन है।

विजयश्री यों ही नहीं मिल जाती है, वह मूल्य मांगती है, और उसका मूल्य होता है - अथक परिश्रम और दृढ़ इच्छा शक्ति। ज्ञान अर्जन चल रहा है। परम परीक्षक प्रभु ने आँखों को कष्टित कर दिया।

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी

6 मास तक आँखों पर पट्टी बंधी रही परन्तु अध्ययन चल रहा था। अपने सम्बन्धी से पुस्तकों को सुना करते थे और ज्ञान-वृद्धि करते रहे। धन्य है ऐसी प्यास को।

दिल्ली में चांदनी चौक में फव्वारे के पास दो दिन पादरी और दो दिन मौलवी अपने-अपने धर्म का प्रचार करते थे। पंडित जी को पता लगा वे वहाँ जाते, दोनों के व्याख्यान सुनते और सप्ताह के शेष दो दिन उनका प्रवचन होने लगा और मौलवी तथा पादरी की धज्जियाँ उड़ने लगी। वाणी की मधुरता और ओजस्विता व्यक्तित्व की सौम्यता, तर्क और युक्तियों की तेजस्विता का परिणाम था दोनों ही वहाँ से भाग गये क्योंकि उनको कोई सुनने को तैयार नहीं। पंडित जी के बोलने पर इतनी भीड़ जुटने लगी कि चांदनी चौक के आवागमन में अवरोध पैदा होने लगा। तव आपको बोलने के लिए गाँधी ग्राउण्ड में स्थान दिया गया।

यह व्याख्यान का कार्यक्रम सन् 1910 से 1925 तक निरन्तर 15 वर्ष तक चला। कोई व्यवधान उनको कर्मठता से रोक न सका। इसी मध्य धर्मपत्नी का देहान्त हुआ। एक मात्र पुत्र प्रभु को प्यारा हुआ। अनेक विघ्न बाधाएं आई परन्तु 'प्रारभ्य चोत्तम जनाः न परिव्यजन्ति।' यह है - देहलवी जी की यशस्विता का रहस्य। पंडित जी की विद्वत्ता सर्वतोमुखी थी। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, अरवी, फारसी के वे पूर्ण विद्वान् थे। वैदिक साहित्य का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया और समस्त मत-मतान्तरों का गहरा तथा समीक्षात्मक अध्यापन किया था। इसी कारण उनकी पकड़ प्रत्येक पर थी और प्रतिपक्षी निरुत्तर हो जाता था। उनकी शैली बेजोड़ थी। वे अत्यन्त प्रत्युत्पन्न मति थे। हाजिर जवाबी अद्वितीय थी। आयतों का उच्चारण इतना स्पष्ट तथा तरन्नुम के साथ करते थे कि सब प्रभावित हो जाते थे। आर्य समाज को एक ऐसा शास्त्रार्थ महारथी मिला जो अजेय था। उन्होंने न जाने कितने शास्त्रार्थ किये और आर्य समाज की यशस्विता को वढ़ाया। सादा जीवन, उच्च विचार और सात्त्विक अन्न और सात्विक मन का आदर्श उनके जीवन में था। शान्त, सौम्य, स्वभाव, छल-प्रपंच से दूर, सरलता से भरा उनका जीवन था। सिद्धान्तों के प्रति वज्र से भी कठोर और हृदय की मृदुता में नवनीत पंडित जी को जनता का अपार सम्मान प्राप्त हुआ। तार्किकता और हाजिर जवाबी आर्य जगत के मानस पर सदा अंकित रहेगी। एक बानगी देखिए -

एक शास्त्रार्थ में मौलाना सना उल्ला ने कहा - पंडित जी, जहाँ आपके राम समाप्त होते हैं ('म' पर) वहीं हमारे मुहम्मद साहब शुरू होते हैं, अतः अव आपको राम का नाम छोड़कर 'मुहम्मद" का जप करना चाहिए। पंडित जी ने कहा - शाबाश, मौलाना शाबाश, परन्तु मौलाना साहब, बीच में ही क्यों रूक गये। आगे भी कहो। मौलाना बोले- आगे क्या है? आप ही कह दीजिए। पंडित जी ने कहा - जहाँ मुहम्मद साहब समाप्त होते हैं ('द' पर) वहाँ से दयानन्द शुरू हो जाते हैं। इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़कर दयानन्द के गीत गाओ। मौलाना ने पूछा दयानन्द कहाँ समाप्त होते हैं। पंडित जी ने कहा दयानन्द जहाँ से प्रारम्भ होता है, वहाँ ही समाप्त होता है। ऐसे उस महान् पुरुष को शतशत नमन है जिसने तिल-तिल जलकर भी आर्यसमाज को गौरवान्वित किया अपने यशः जीवन को अमर बना दिया।

- आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-92

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-त्तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.